Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024, R.N.I. No. 720 14/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.com

नई दिल्ली • वर्ष 25 • अंक 41 • 15 जुलाई - 21 जुलाई, 2024 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 13-07-2024 • पेज 16 • ₹ 10 रुपये

अपने मत की प्रशंसा करने वाले कहते हैं– अपने–अपने सांप्रदायिक अनुष्ठान में ही सिद्धि होती है, दूसरे प्रकार से नहीं होती।
- आचार्य श्री भिक्षु

संघ हमारा कितना पावन,
जैसे निर्मल गंगा का जल।
संघ यह कितना मन भावन,
जैसे गहन वनों में संबल।

मुखड़े पर मुस्कान संघ की,
अधरों पर हो जिसका नाम।
होठों में अनुगुंज संघ की,
संघ पुरुष को करें प्रणाम।।

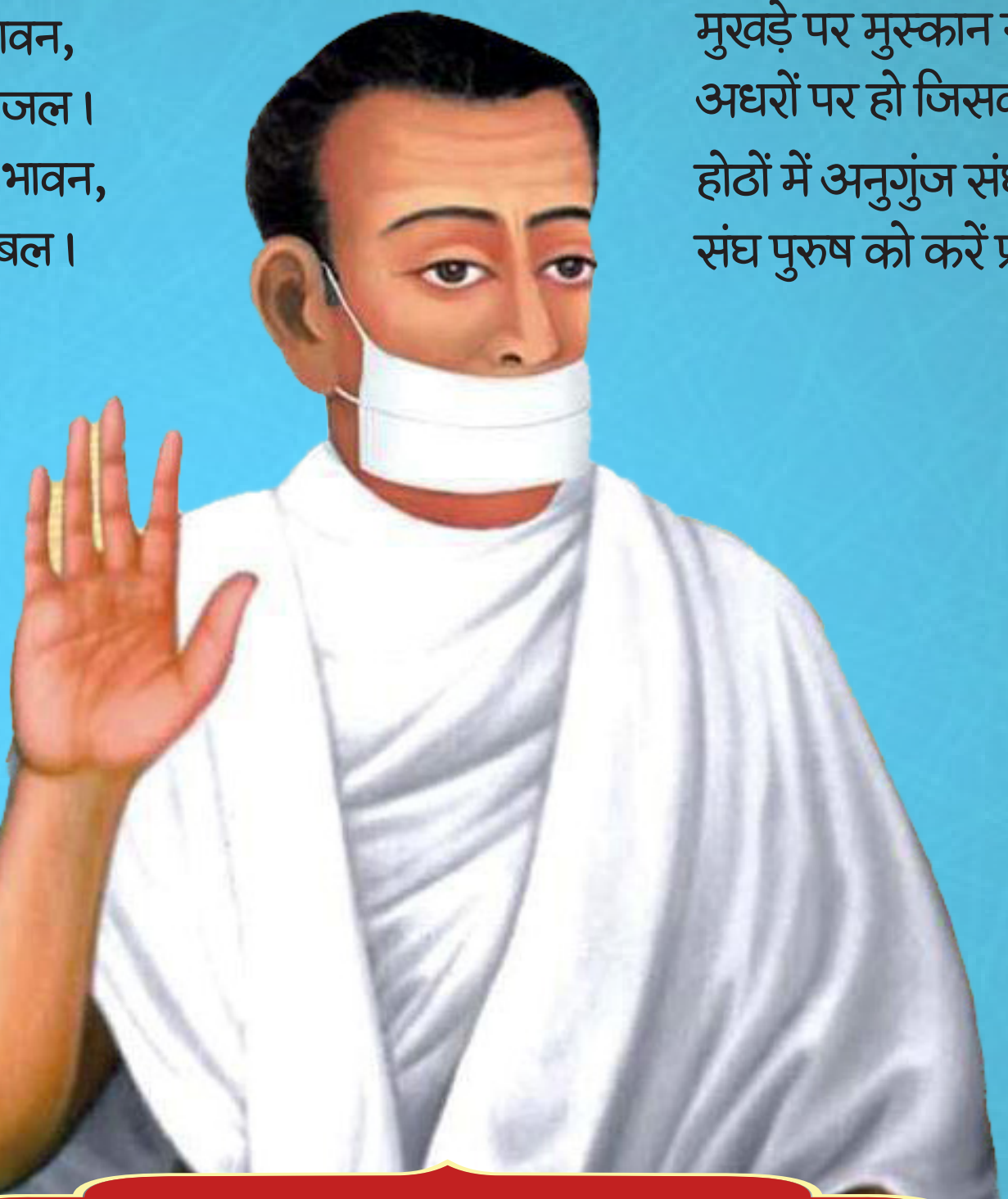

महामना आचार्यश्री भिक्षु

के 299वें जन्मोत्सव, 267वें बोधि दिवस, 265वें तेरापंथ स्थापना दिवस एवं चातुर्मास स्थापना के अवसर पर भावभीनी वंदना।

श्रद्धाप्रणत अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स परिवार

संवर और निर्जरा हो जाएं आत्मगत : आचार्यश्री महाश्रमण

गुजरात स्तरीय भव्य स्वागत समारोह का व्यारा में हुआ आयोजन

व्यारा।
8 जुलाई, 2024

गुजरात प्रदेश के व्यारा में तेरापंथ सरताज आचार्यश्री महाश्रमणजी का सूरत चातुर्मास हेतु पदार्पण पर गुजरात स्तरीय भव्य स्वागत समारोह का आयोजन किया गया। के. एम. गांधी प्राइमरी स्कूल प्रांगण में बने तीर्थंकर समवसरण में गुजरात प्रवेश स्वागत समारोह के अवसर पर जन-जन के हृदय सम्राट आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आगम वाणी की अमृत वर्षा करते हुए फरमाया कि दो कार्य होते हैं, एक निरोध यानि रोकना और दूसरा कार्य होता है निकालना।

शोधन के लिए निरोध भी अपेक्षित है तो विजातीय तत्वों को बाहर निकालना भी जरूरी होता है। नए सिरे से गन्दगी आए नहीं और पहले से जो मैल है, उसको निकाल लिया जाए।

जैन साधना पद्धति में दो शब्द हैं- संवर, निर्जरा। ये दोनों शब्द जैन साधना पद्धति का प्रतिनिधित्व करने वाले शब्द हैं। संवर का काम है कि नए सिरे से पाप कर्म का बन्ध न हो और आगे जाकर कोई भी पाप-पुण्य बन्ध न हो, यह व्यवस्था संवर के द्वारा होती है। जो पहले से कर्म बन्धे हुए हैं, उन पाप कर्मों को तोड़ना, निकालना यह कार्य निर्जरा तत्त्व के अन्तर्गत होता है। संवर और निर्जरा दोनों तत्त्व हमारे जीवन में आत्मगत हो जाएं तो हम विशुद्धि की दिशा में गति कर सकते हैं, संवर और निर्जरा की अन्तिम निष्पत्ति मोक्ष को हम प्राप्त कर सकते हैं। संवर की साधना का बड़ा महत्व है। संवर रहेगा तो कर्म कटेंगे। संवर कुछ मुश्किल है, निर्जरा उसकी तुलना में कुछ आसान है। निर्जरा तो पहले गुणस्थान में भी हो सकती है पर संवर पांचवें गुणस्थान से शुरू होता है। अकाम निर्जरा तो और भी सुलभ है, एकेन्द्रिय जैसे जीव के भी कर्म झड़ते हैं। सम्पूर्णतया संवर चौदहवें गुणस्थान में होता है। एकमात्र चौदहवें - अयोगी केवली गुणस्थान में पांचों संवर सम्यक्त्व, विरति, अप्रमाद, अकषाय और अयोग मिलते हैं। अन्य किसी भी गुणस्थान में पांचों संवर एक साथ नहीं हो सकते।

निर्जरा छोटे-छोटे प्राणियों के भी हो सकती है। निर्जरा का साधन है- तप। तप और निर्जरा में अभेद भी बताया गया। इसलिए तपस्या के बारह भेद को ही निर्जरा के भेद के रूप में मान लिए गये हैं। कारण और कार्य से भेद है, बाकी निर्जरा तो एकाकार है। तपस्या के बारह प्रकारों में एक प्रकार अनशन है। चतुर्मास में तो उपवास, अठाई, मासखमण आदि अनेक तपस्याएं होती हैं। पिछली बार सूरत में अक्षय तृतीया कार्यक्रम में वर्षीतप के 1000 से भी अधिक पारणे हुए थे। गुरुकुलवास में इतने वर्षीतप पारणे का कार्यक्रम संभवतः पहली बार हुआ था। कठिनाई को सहन करना भी तपस्या है। जीवन में प्रतिकूलताएं आ सकती हैं, समता भाव से इनको सहना तपस्या है। कष्ट में भी चिन्तन स्पष्ट रहे कि मेरे कर्मों की निर्जरा हो रही है। निमित्त कोई भी हो सकता है, पर किए गए कर्म तो भोगने ही पड़ते हैं।

भगवान महावीर से जुड़े शासन से हम संबद्ध हैं। भगवान के सामने तो कितनी प्रतिकूलताएं आई थी फिर भी उन्होंने समता भाव रखा। हमारे आद्य प्रवर्तक आचार्यश्री भिक्षु के जीवन में कितने विरोध-प्रतिकूलताएं आए थे। गुरुदेव तुलसी के सामने भी कितने विरोध के प्रसंग आए थे। विरोध को विनोद मान कर छोड़ दें।

आचार्य श्री तुलसी का लम्बा जीवनकाल रहा। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी को भी हमने देखा। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने गुजरात को दो चातुर्मास प्रदान किए थे। आचार्य श्री महाप्रज्ञजी ने सूरत से खान्देश की ओर प्रस्थान किया था, हमने खान्देश से सूरत की ओर प्रस्थान किया। गुजरात का हमारा प्रवास, प्रवेश और यात्रा लंबे समय की संभावित है।

गुजरात में जैन संस्कृति को देखने का अवसर भी मिलता है। एक संयोग यह भी बन गया कि गुरुदेव तुलसी ने का गुजरात का पहला चातुर्मास वि.सं. 2024 में किया था और हमारा आचार्य रूप में पहला चातुर्मास सन् 2024 में होने जा रहा है। मानो गुरुदेव तुलसी का अनुगमन हो रहा है। हमारी गुजरात की यात्रा आध्यात्मिकता की दृष्टि से अच्छी रहे, मंगलमय रहे। सभी धार्मिक-आध्यात्मिक उत्साह बनाते हुए खूब धार्मिक-आध्यात्मिक कार्य करें।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने मंगल उद्बोधन प्रदान करते हुए कहा कि कुछ वृक्ष पत्तों वाले होते हैं, कुछ वृक्ष फूलों वाले होते हैं और कुछ वृक्ष फलों वाले होते हैं। पत्तों वाले वृक्ष अल्प उपकारी, उनसे अधिक उपकार करने वाले फूलों वाले और विशिष्ट उपकार करने वाले फलों वाले वृक्ष होते हैं। पत्तों वाले वृक्ष छाया और चमक, फूलों वाले वृक्ष सुगंध और फलों वाले वृक्ष सरसता के प्रतीक बनते हैं।

आचार्यवर के जीवन में चमक है, महक है और सरसता भी है। जहां चमक, महक और सरसता है, वह व्यक्ति दूसरों के लिए कुछ कर सकता है, वह व्यक्ति ही अध्यात्म से संपन्न बन सकता है। आचार्यवर जहां भी जहां पधारते हैं, अध्यात्म की वर्षा करते हैं।

(शेष पेज 4 पर)

जीवन की बहुत बड़ी सम्पदा है अच्छे संस्कार, विचार और आचार : आचार्यश्री महाश्रमण

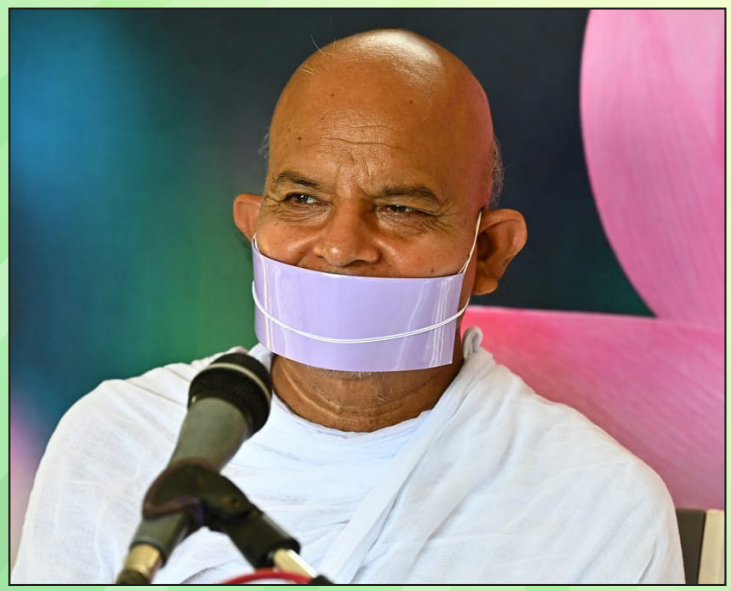

दोसवाड़ा।
7 जुलाई, 2024

तेरापंथ के नाथ आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मंगलदेशना प्रदान कराते हुए फरमाया कि हमारी यह धर्म यात्रा-अध्यात्म यात्रा चल रही है। यात्रा दो प्रकार की हो जाती है- एक तो पैरों से या वाहन से चलकर होने वाली यात्रा और दूसरी यात्रा है- जत्ता यात्रा, धर्म की यात्रा। चतुर्मास में एक जगह रहते हुए भी वह धर्म यात्रा चलती रह सकती है। अध्यात्म की, साधना की यात्रा चलती रहती है।

हमारी यात्रा धर्म की यात्रा है। पैरों से चलकर होने वाली यात्रा भी धर्म को पुष्ट करने वाली, अहिंसा का उद्घोष करने वाली यात्रा है। इस यात्रा में हम तीन बातें बताया करते हैं- सद्भावना, नैतिकता और नशा मुक्ति। विचारों में भिन्नता होते हुए भी हम सबमें परस्पर सद्भावना रहनी चाहिए। आदमी को व्यापार, लेन-देन में ईमानदारी रखनी चाहिये। किसी को धोखा देने से बचने का प्रयास करना चाहिये। आदमी को नशीली चीजों के सेवन से बचने का प्रयास करना चाहिये। ये तीनों बातें गृहस्थों में है, तो मान लें जीवन में अच्छे संस्कार है।

जीवन की बहुत बड़ी सम्पदा है- अच्छे संस्कार, अच्छा विचार, अच्छा आचार। विचार अच्छे हैं, वे व्यवहार में भी आने चाहिए। ज्ञान व्यवहार में उतरे इसके लिए संस्कारों का पुल बनाएं। हमारी आस्था अच्छी हो। ईमानदारी, अहिंसा, निरंहकारिता, शांति, क्षमा, संयम रूपी अच्छे संस्कार हों और वे व्यवहार में अवतरित हो जाएं तो व्यवहार अच्छा हो सकता है।

अच्छे संस्कार परिवारों में मिलते हैं। विद्यालयों में भी शिक्षा संस्कारयुक्त हो तो बच्चे अच्छे और सच्चे बनेंगे, यह समाज-देश के लिए अच्छी बात हो सकती है। इन संस्कारों को पुष्ट करने में ज्ञानशालाएं भी बहुत बड़ा माध्यम बन सकती हैं। धार्मिक ज्ञान भी बच्चों को मिले, यह बाल-पीढ़ी की एक सेवा है।

(शेष पेज 4 पर)

मन, वचन, काया व इन्द्रियों पर अनुशासन से साधें आत्मानुशासन : आचार्यश्री महाश्रमण

आनंदपुर।
6 जुलाई, 2024

विकास के महासूत्रधार आचार्यश्री महाश्रमणजी ने महाराष्ट्र की लम्बी यात्रा सम्पन्न कर गुजरात राज्य में पावन प्रवेश कराया। अणुव्रत अनुशास्ता ने पावन पाथेय प्रदान कराते हुए फरमाया कि आत्मानुशासन बहुत महत्वपूर्ण तत्त्व है। शास्त्र में कहा गया है कि श्रेष्ठ यही है कि मैं स्वयं अपनी आत्मा पर दमन-अनुशासन कर लूं। संयम और तप के द्वारा स्वयं ही स्वयं का दमन करूं। यदि मैं स्वयं पर अनुशासन नहीं करूंगा तो दूसरों को जबरन मेरे पर अनुशासन करना पड़ेगा।

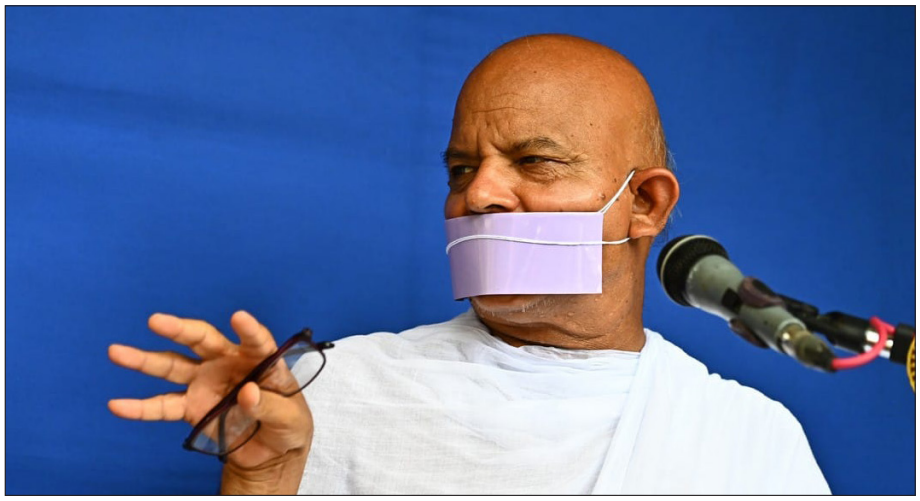

स्वयं पर स्वयं का अनुशासन कैसे हो? आत्मा पर अनुशासन कैसे हो? आत्मा तो अमूर्त्त है। अमूर्त्त तत्त्व आंखों से देखा नहीं जा सकता। अपने पर अनुशासन करने के लिए अपनी जबान पर अनुशासन कर लें। जबान की लगाम हाथ में रहे। जबान से आदमी झूठ-कटु बात भी बोल सकता है। झूठ, कटु और फालतू बात नहीं बोलना ये तीन बातें सध जाए तो वचनोनुशासन कायम हो सकता है। किसी पर अयथार्थ, झूठा आरोप न लगाएं, अनावश्यक बातें न करें।

हम शरीर को कुछ साधकर उस पर अनुशासन करने का प्रयास करें। शरीर को स्थिर रखने का प्रयास करें, प्रेक्षाध्यान से यह सध सकता है। शरीर से जान-बूझकर किसी को तकलीफ न दें। मन पर भी अनुशासन करने का प्रयास हो। मन में दुर्विचार न आए, सबके प्रति सद्भावना, मंगलभावना रहे। सब प्राणी सुखी रहें, कल्याण की दिशा में सब आगे बढ़ें। विचारों में अध्यात्म की भावना रहे।

इन्द्रियों पर भी अनुशासन रहे। बुरा सुनो मत, बुरा देखो मत, बुरा बोलो मत, बुरा सोचो मत और किसी का बुरा करो मत। किसी दुःखी आदमी का दुःख सुनकर कोई धार्मिक-आध्यात्मिक मदद कर दे। कानों से आगम वाणी, कल्याणी वाणी सुनें।

आज गुजरात में प्रवेश हुआ है। पहले गुजरात से ही आए थे। सूरत में आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने भी चतुर्मास किया था, वहीं पर हम चतुर्मास करने जा रहे हैं। गुजरात की जनता में भी धार्मिक भावना रहे। हम आत्मानुशासन को साधें। मनोनुशासन, वचनोनुशासन और कायोनुशासन व इन्द्रियानुशासन को हम साध लेते हैं, तो इसकी निष्पत्ति यह होती है, मानो आत्मानुशासन हमारा सध जाता है। हम इन चारों पर अनुशासन रखने का प्रयास करें। यह हमारे मानव जीवन की निष्पत्ति हो सकती है।

आगम साहित्य में हमें अनेक बातें मिलती है, जो साधना की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। संयम और तप के द्वारा हम आत्मा का दमन करें, अपनी आत्मा को साधें। इससे हम आत्मा पर अनुशासन साधने में सफल हो सकते हैं।

पूज्यवर के स्वागत में पूनम बुरड़ ने गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

जीवन में मार्दव का विकास करें : आचार्यश्री महाश्रमण

नवापुर।
5 जुलाई, 2024

जिनधर्म के व्याख्याता आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आर्हत् वाणी की अमृतवर्षा कराते हुए फरमाया कि मनुष्य का जन्म बहुत महत्वपूर्ण जन्म होता है। दुनिया में प्राणी तो अनेक हैं, किन्तु मनुष्य की योनि, मनुष्य का जीवन विशिष्ट होता है। आदमी में अच्छाइयां मिल सकती हैं, तो कमजोरियां भी मिल सकती हैं। आदमी में सद्गुण मिल सकते हैं, तो दुर्गुण भी मिल सकते हैं।

एकेन्द्रिय से चतुरिन्द्रिय तक के प्राणी अविकसित प्राणी होते हैं। समनस्क मनुष्य इन्द्रियों की दृष्टि से एक विकसित प्राणी होता है। प्राणी के भीतर चेतना होती है, सामान्य चेतना कषाय से रंजित होती है। चार कषायों में मान भी एक कषाय है, निरंहकार होना बड़ी बात है। ज्ञान होने पर भी मौन रखना बड़ी बात है। शक्ति होकर भी क्षमा रखना बड़ी बात है। विद्या विनय से शोभित होती है। पद, जाति, रूप, बल और धन का घमंड हो सकता है। कुछ होने पर भी घमंड नहीं होना अच्छी बात है। हर चीज का कुछ न कुछ उपयोग हो सकता है। हम साधु तो अकिंचन होते हैं। हमें न नोट चाहिये, न वोट चाहिये, न प्लोट चाहिये, न सर्दी में कोई कोट चाहिये। हमें तो कोई खोट हो तो दे दो। आदमी घमंड के कारण अपना कुछ अहित कर सकता है, यह अभिमान तो सुरापान के समान है। जो अभिवादनशील है, वृद्धों की सेवा करने वाला है, उसके आयु, विद्या, यश और बल की वृद्धि हो सकती है। गृहस्थों में भी पैसा या पद हो सकता है, पर उसका अहंकार न हो। जो चीज मिली है, उसका घमंड नहीं करें, उसे बांटने का प्रयास करें। जीवन में मार्दव का विकास करें। पूज्यवर के स्वागत में रोशन शिरिषकुमार नाइक, संगीता भरत गावित ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। नवापुर बहु मंडल ने स्वागत गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

मलिनता को आलोचन और प्रायश्चित से करें दूर : आचार्यश्री महाश्रमण

विसरवाड़ी।
4 जुलाई, 2024

धर्म दिवाकर आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ विसरवाड़ी गांव स्थित सार्वजनिक कला व वाणिज्य महाविद्यालय में पधारे। महाविद्यालय परिसर में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फ़रमाया कि प्रश्न किया गया निर्वाण को कौन प्राप्त कर सकता है? उत्तर दिया गया कि निर्वाण को वह प्राप्त कर सकता है जिसके जीवन में धर्म ठहरता है। दूसरा प्रश्न किया गया कि धर्म किसके जीवन में ठहरता है? उत्तर दिया गया कि धर्म शुद्ध व्यक्ति के हृदय में ठहरता है। तीसरा प्रश्न किया गया कि शुद्ध कौन होता है? बताया गया कि जो सरल, ऋजुभूत होता है, उसकी शुद्धि होती है।

ऋजुभूत की शोधि होती है, इस बात को हम प्रायश्चित्त के सन्दर्भ में देखें। किसी साधु से कोई प्रमाद हो गया, मलिनता हो गई। अब उस मेल को उतरना है तो आलोचन, प्रायश्चित्त उसका उपाय हो सकता है। जो सरल होगा वह सम्यक्तया प्रायश्चित्त कर सकेगा। वह कितना अच्छा व्यक्ति है जो स्वयं चलाकर, अपनी गलती बताकर प्रायश्चित्त मांगता है। ऋजुता से बता देना ही मानो अपने आप में शोधि का कुछ काम हो जाता है, फिर प्रायश्चित्त लेकर उसका निर्वहन करने से शेष कार्य भी हो सकता है। हमारे जीवन में ऋजुता और सरलता रहे। झूठ का मार्ग टेढ़ा-मेढ़ा, दाव-पेंच वाला है। झूठ बोलने वाले व्यक्ति के दिमाग में ज्यादा तनाव रह सकता है। सच्चाई, ईमानदारी का रास्ता सीधा-सपाट है। थोड़ी से हानि, बदनामी, कठिनाई से बचने के लिए व्यक्ति

झूठ का रास्ता ले लेता है। पर सच्चाई सामने आने के बाद तो ज्यादा कठिनाई हो सकती है। सच्चाई सामने न भी आये तो आत्मा के तो कर्म मल चिपक ही जाते हैं। शुद्धि के लिए प्रायश्चित और प्रतिक्रमण दो उपाय हैं। प्रतिक्रमण करते हुए दूसरा काम या बातें साथ में न हो। प्रतिक्रमण का पाठ अर्थ बोध सहित हो जाए। प्रतिक्रमण उभय काल का और आलोयणा रोज हो जाए तो जीवन में शुद्धि बनी रह सकती है। प्रायश्चित लेने वाले में सरलता हो तो प्रायश्चित प्रदाता में गंभीरता होनी चाहिए। यह डॉक्टर और मरीज का सा सम्बन्ध है। हर साधु-साध्वी यह चिंतन रखे कि अंतिम श्वास आने से पहले-पहले मेरी आलोयणा हो जाए। चतुर्दशी के अवसर पर आचार्यप्रवर के निर्देशानुसार मुनि देवकुमारजी, मुनि खुशकुमारजी व मुनि अर्हम् कुमारजी ने लेखपत्र का उच्चारण किया। उपस्थित चारित्रात्माओं ने लेखपत्र का वाचन किया। महाविद्यालय की प्राचार्य जयश्री गावीत ने पूज्य प्रवर के स्वागत में अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर नुक्कड़ नाटक

गुवाहाटी।

अणुव्रत समिति एवं मारवाड़ी युवा मंच गुवाहाटी ग्रेटर शाखा ने संयुक्त रूप से विश्व तंबाकू निषेध दिवस के उपलक्ष्य में फटासील हरिजन कॉलोनी स्थित महात्मा गांधी बुनियादी विद्यालय के डॉ. भीमराव अंबेडकर प्रतिमूर्ति स्थल पर विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया।

अवकाश जम्मड़ द्वारा निर्देशित व अभिनीत साथ में मंजू देवी भंसाली, सरला बजाज, संगीता बैद, वृंदा गगर व छवि बजाज द्वारा अभिनीत नाटक में तंबाकू सेवन से होने वाले भयंकर परिणामों को दर्शाया गया, जिसे फटासील हरिजन कॉलोनी के निवासियों ने ध्यानपूर्वक देखा और समझा।

सभी को नशा मुक्ति का संकल्प दिलाया गया। 'नशा मुक्त परिवेश, स्वस्थ होगा देश' नामक नाटिका में मुख्य संदेश दिया गया कि नशे से मुक्त होना संभव है, बशर्ते व्यक्ति को सही मार्गदर्शन और समर्थन मिले। अणुव्रत समिति गुवाहाटी के अध्यक्ष बजरंग बैद ने कहा कि इस नाटक का मुख्य उद्देश्य नशे के दुष्प्रभाव को दिखाना है।

कार्यक्रम में हरिजन पंचायती कमेटी फटासील के सदस्यों ने अध्यक्ष माटा ईश्वाराव की अध्यक्षता में व्यवस्था बनाने में भरपूर सहयोग दिया। अणुव्रत समिति द्वारा कमेटी को अणुव्रत आचार संहिता पट्ट भेंट किया गया।

रक्तदान शिविर में 176 यूनिट्स रक्त एकत्रित

साउथ कोलकाता। तेरापंथ युवक परिषद, साउथ कोलकाता ने अभातेयुप के तत्वावधान में मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के तहत रक्तदान शिविर का आयोजन तेरापंथ भवन साउथ कोलकाता में किया।

तकरीबन 30 नेत्र विहीन लोगों ने रक्तदान कर समाज के सामने उदाहरण प्रस्तुत किया। शिविर में कुल 176 यूनिट रक्त संग्रहित किया गया। श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा साउथ कोलकाता से अध्यक्ष बिनोद चोरडिया, पदाधिकारियों एवं वरिष्ठ सदस्यगण ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। मानव सेवा संस्था, मानव ज्योत चेरिटेबल ट्रस्ट, महा जीवन संस्था, टीजीए संस्था आदि के सदस्यों का सहयोग प्राप्त हुआ।

मां के मन में बहता है करुणा का सागर

उत्तर हावड़ा।

मुनि जिनेशकुमार जी के सान्निध्य में अभातेमम के निर्देशानुसार स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल के मार्गदर्शन में 'मां - बेटी कार्यशाला' का आयोजन तेरापंथ भवन में हुआ। इस अवसर पर मुनि जिनेशकुमारजी ने कहा- भारतीय संस्कृति में मां का विशिष्ट स्थान है।

मां की महत्ता दशों दिशाओं में गूंजी है। वह बच्चों का लालन-पालन करती है। मां के मन में करुणा का सागर बहता है। मां अनंत उपकारिणी होती है। जिसने मां को ठुकरा दिया उसे दुनिया भी ठुकरा देती है।

मुनिश्री ने आगे कहा- बेटियां समाज के भविष्य का आधार है, समाज की तस्वीर व तकदीर है। कन्याओं को संस्कारी बनाना घर परिवार को संस्कारी बनाना है।

मां-बेटी एक दूसरे का ध्यान रखे, विचारों को सम्मान दें, बच्चों की भावनाओं की कद्र करें एवं स्वयं आदर्श जीवन जिएं। मां के उपकारों को याद रखें। माताएं भी बच्चों को अच्छे संस्कार दें, बार-बार डांटे नहीं, प्रेम से समझाएं। कोई भी प्रवृत्ति करें उसमें मर्यादा का ध्यान रखे।

मुनि कुणालकुमार जी ने गीत का संगान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ कन्यामंडल की बहनों के मंगल गीत से हुआ। कन्या मंडल ने लघु नाटिका की प्रस्तुति दी। आभार कन्या मंडल प्रभारी बबीता कोठारी ने किया।

रंग-बिरंगे कार्यक्रमों की एक झलक

खार।

आचार्यश्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वीश्री शकुन्तलाकुमारी जी के सान्निध्य में खार में नित नये कार्यक्रम आयोजित हुए। प्रश्न मंच, अभिनव सामायिक व दम्पति शिविर ने खार के श्रावक-श्राविकाओं में नव उत्साह का संचार किया। त्रिदिवसीय तत्व ज्ञान कार्यशाला में नमस्कार महामंत्र, लोगस्स, अर्हत् वंदना के बारे में विषेश रूप से चर्चा हुई। साध्वी शकुन्तला कुमारीजी ने सामायिक के बारे में बताते हुए कहा- सामायिक कल्पवृक्ष, चिन्तामणि रत्न है। कल्पवृक्ष से सब इच्छाओं की पूर्ति होती है वैसे ही शुद्ध सामायिक से अध्यात्मिक संपदा प्राप्त होती है। दम्पति जीवन के विषय पर साध्वी श्री ने कहा- एक दूसरे पर विश्वास रखें, सहन करें और मधुर वाणी से वार्तालाप करें। साध्वी संचितयशाजी ने दैनिक दिनचर्या के फार्मूले बताये।

साध्वी जागृतप्रभाजी ने ध्वनि व जप के प्रयोग करवाये। साध्वी रक्षितयशाजी ने मधुर गीतों का संगान करते हुए कहा- प्रत्येक व्यक्ति को माइंड में आईस फैक्ट्री व मुख में शुगर फैक्ट्री खोलनी चाहिए। प्रश्न-मंच प्रतियोगिता में ऐतिहासिक, तात्विक प्रश्नों को पूछते हुए उनके बारे में विशेष जानकारी दी।

15वें टीपीएफ स्थापना दिवस का आयोजन

नवी मुंबई।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के 15वें स्थापना दिवस का आयोजन टीपीएफ नवी मुंबई शाखा द्वारा अणुव्रत सभागार वाशी नवी मुंबई में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत टीपीएफ फेमिना विंग द्वारा मंगलाचरण के साथ की गई।

टीपीएफ नवी मुंबई के अध्यक्ष दिलखुश मेहता ने सभी का स्वागत किया और स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम की भूमिका प्रस्तुत की। टीपीएफ मुंबई फाउंडर एवं एक्स प्रेसिडेंट बलवंत चोरडिया ने टीपीएफ के विभिन्न उद्देश्यों और आयामों के बारे बताया और सभी से आचार्य महाप्रज्ञ शिक्षा सहयोग योजना से जुड़ने का आह्वान किया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता विष्णु नेमाने ने आज के डिजिटल युग में हो रहे साइबर क्राइम से सावधानी रखने के विविध उपायों एवं हो जाने के पश्चात की प्रक्रिया से अवगत कराया। तत्पश्चात उन्होंने प्रतिभागियों की सभी जिज्ञासाओं का समाधान किया। श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा वाशी के नवनिर्वाचित अध्यक्ष पंकज चण्डालिया ने कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि इस तरह के कार्यक्रम समाज की ज़रूरत है और आगे भी टीपीएफ नवी मुंबई के सभी कार्यक्रमों में सहयोग करने का आश्वासन दिया और साथ ही वाशी सभा की नवगठित कार्यकारिणी में टीपीएफ की स्पेशल विंग का एलान भी किया। तेयुप अध्यक्ष अरविंद खटेड़, वाशी महिला मंडल की मंत्री सीमा मेहता ने टीपीएफ को स्थापना दिवस की बधाई संप्रेषित की। कार्यक्रम का संचालन मंत्री ललित चण्डालिया और आभार ज्ञापन उपाध्यक्ष रणजीत खटेड़ द्वारा किया गया।

संस्कार निर्माण शिविर में किए विशेष प्रयोग एवं संकल्प

राजाराजेश्वरी नगर।

साध्वी उदितयशाजी के सान्निध्य में एवं श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, राजाराजेश्वरी नगर के तत्वावधान में 8 से 14 आयु वर्ग के बच्चों हेतु संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन किया गया। नमस्कार महामंत्र के साथ शिविर का शुभारंभ हुआ। अध्यक्ष राकेश छाजेड़ ने बच्चों का स्वागत कर ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं की सेवा के प्रति आभार व्यक्त किया एवं अपने कार्यकाल का शुभारंभ ज्ञानशाला के शिविर से करवाने हेतु साध्वीश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। साध्वी उदितयशाजी ने नमस्कार महामंत्र की कहानी को बहुत ही सुंदर एवं रोचक तरीके से बताया एवं बच्चों को प्रतिदिन नमस्कार महामंत्र जप की प्रेरणा दी। साध्वी संगीतप्रभाजी ने तेरापंथ के 11 आचार्यों पर आधारित गेम खिलाए, विजेताओं को सभा द्वारा पुरस्कृत किया गया।

साध्वीश्री ने बच्चों के मस्तिष्क को सक्रिय बनाने के लिए प्रैक्टिकल प्रयोग एवं संकल्प करवाए। ज्ञानशाला संयोजिका प्रिया छाजेड़, केंगेरी की संयोजिका पूनम दक एवं विजयनगर से पधारी प्रशिक्षिकाओं ने अपने विचार रखे। ज्ञानशाला संयोजिकाओं एवं सभा मंत्री गुलाब बाँठिया ने शिविरार्थियों को उपहार आदि देकर उत्साहवर्द्धन किया।

प्रथम पृष्ठ का शेष

संवर और निर्जरा...

आप अध्यात्म का मानसून लेकर आये हैं, जिनसे जन-जन को अमृत की प्राप्ति होगी, तृप्ति की अनुभूति होगी। आचार्यवर नैतिकता और नशामुक्ति के भावों को जगाने पधारें हैं।

पूज्यवर के स्वागत में स्थानीय सभाध्यक्ष मीठालाल खाब्या, तेयुप से संदीप चौरड़िया, मूर्तिपूजक समाज से ऋषभ भाई शाह, स्थानकवासी समाज से रणजीत बडोला, बी. एन. शाह, ने अपनी अभिव्यक्ति दी।

स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल ने स्वागत गीत एवं ज्ञानशाला ने सुन्दर प्रस्तुति दी। गुजरात स्तरीय स्वागत समारोह में चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति सूरत के अध्यक्ष संजय सुराणा, स्वागताध्यक्ष संजय जैन एवं कच्छ भुज से चंदूभाई संघवी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। अहमदाबाद व्यवस्था समिति अध्यक्ष अरविन्द संचेती ने अपने भाव व्यक्त किए। अहमदाबाद चातुर्मास के लोगो का अनावरण पूज्यवर की सन्निधि में हुआ। व्यवस्था समिति सूरत एवं तेरापंथ किशोर मंडल ने गीत का संगान किया। प्रिया गुर्जर ने पूज्यवर से 9 की तपस्या के प्रत्याख्यान ग्रहण किए।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

जीवन की बहुत बड़ी..

छोटे-छोटे बच्चे ज्ञानशाला में आते हैं, रूचि से पढ़ते हैं, तो यह अच्छी बात है। ज्ञानशाला संस्कारों की सम्पदा है। महासती गुलाबांजी तो आठ वर्ष पूरे होने से पहले ही दीक्षित हो गई थी। अनेक साधु हैं, जो नौ-दस वर्ष की उम्र में ही दीक्षित हो गए थे। छोटे संत भी हमारी बालपीढ़ी है। ज्ञानशाला के बच्चे समाज का भविष्य हैं, तो छोटे संत धर्मसंघ का भविष्य हो सकते हैं।

अणुव्रत और जीवन-विज्ञान लोक कल्याणकारी कार्य हैं। आज भौतिक तकनीकी में कितना विकास हो रहा है, सुविधाएं भी बढ़ी हैं। इनका उपयोग भी है, पर इनके साथ अध्यात्म और धर्म को भी पुष्टि मिले। यह संस्कारों की सम्पदा बढ़ती रहे, यह काम्य है। प्रिया गुर्जर ने पूज्यवर से अठाई के प्रत्याख्यान किये। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

संक्षिप्त खबर

गुरुचरणों में रखी चातुर्मास की अर्जी

राजाराजेश्वरी नगर। श्रावकों का एक दल चातुर्मास की अर्जी लेकर भुसावल, महाराष्ट्र में परमपूज्य गुरुदेव आचार्य श्री महाश्रमणजी के दर्शन हेतु श्री चरणों में पहुंचा। तेरापंथ सभाध्यक्ष राकेश छाजेड़ एवं ट्रस्ट अध्यक्ष मनोज डागा के नेतृत्व में उपाध्यक्ष सरोज आर बैद, राजेश छाजेड़, मंत्री गुलाब बाँठिया, कोषाध्यक्ष देवेन्द्र नाहटा, संगठन मंत्री विनोद बोथरा, महिला मंडल उपाध्यक्ष मंजू बोथरा चारित्रात्माओं के चातुर्मास प्राप्ति की उत्कट भावना लेकर गुरु चरणों में पहुंचे।

सभाध्यक्ष राकेश छाजेड़ ने अपनी नवनिर्मित प्रबंध मंडल के साथ गुरुदेव के दर्शन कर सुखसाता की पृच्छा करते हुए यहां विराजित चारित्रात्माओं की सुखसाता से अवगत कराया। आर. आर. नगर की वस्तुस्थिति से अवगत कराया एवं गीतिका द्वारा अपने भाव व्यक्त किए। पिछले दो चातुर्मास खाली जाने की व्यथा का वर्णन किया एवं अपनी रिक्त झोली गुरुदेव के समक्ष रखी। मुख्यमुनि महावीरकुमार जी, साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी, साध्वीवर्या जी आदि चारित्रात्माओं की दर्शन सेवा का लाभ लिया। मंजू बोथरा ने महिला मंडल की गतिविधियों की जानकारी दी।

श्रावक सम्मेलन का आयोजन

मुलुंड (मुंबई) । उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमारजी के सान्निध्य में क्षेत्रीय श्रावक सम्मेलन का आयोजन किया गया। मुनिश्री ने कहा कि श्रावक-श्राविका का सहयोग मिलने से ही साधु-साध्वियों का संयम पलता है। इसलिए भगवान ने श्रावक-श्राविकाओं को माता-पिता तुल्य बताया है। श्रावकों को अपने बारह व्रतों की जानकारी होनी चाहिए। श्रावकों का जीवन व्यसन मुक्त और साधना युक्त होना चाहिए। प्रत्येक श्रावक-श्राविका अपने बच्चों को संस्कारी बनाने के लिए प्रयत्नशील हों। जिससे परिवार और धर्म संघ की गरिमा-महिमा बढाने में आप सहयोगी बन सकें। उपासक श्रेणी, ज्ञानशाला, प्रेक्षाध्यान, युवक परिषद, महिला मंडल, किशोर मंडल, कन्या मंडल में भी श्रावक श्राविकाओं का उचित सहयोग मिले, तब ही सभी सक्रिय और गतिशील बन सकते हैं। कार्यक्रम में गणपतलाल डागलिया और सलिल लोढ़ा ने भी अपने सारगर्भित विचार रखे। कार्यक्रम के अंत में सभा अध्यक्ष विनतीलाल मेहता ने अपनी कार्यकारिणी घोषित की मंत्री महेंद्र सांखला, उपाध्यक्ष हस्तीमल सोनी, सुरेश चोरडिया कोषाध्यक्ष मूलचंद धाकड़ को नियुक्त किया गया।

महाप्रभावक मंत्र साधना का आयोजन

चेन्नई। साध्वी गवेषणाश्रीजी के सान्निध्य में किलपॉक में महाप्रभावक मंत्र साधना का आयोजन रखा गया। साध्वीश्री ने लगभग दो घंटे मंत्र साधना का प्रयोग करवाते हुए साधना के नियमों का उल्लेख किया। साध्वी मंयकप्रभाजी ने कहा कि मंत्र की साधना करने से पहले उसकी विधि जानना जरूरी होता है तभी साधना की सार्थकता होगी। साध्वी दक्षप्रभाजी ने गीतिका का संगान किया। कार्यक्रम में संघीय संस्थाओं के पदाधिकारियों और कार्यकताओं के साथ लगभग 250 भाई-बहनों की उपस्थिति रही।

आध्यात्मिक मिलन समारोह

अमराईवाड़ी। साध्वी मधुस्मिताजी एवं साध्वी काव्यलताजी का नारोल, अहमदाबाद में आध्यात्मिक मिलन हुआ। इस ऐतिहासिक पल का अमराईवाड़ी, शाहीबाग, पश्चिम एवं कांकरिया का श्रावक समाज साक्षी बना। साध्वी मधुस्मिताजी, साध्वी काव्यलताजी एवं सहवर्ती साध्वीवृन्द ने गीतिका के माध्यम से अपनी भावनाएं व्यक्त की।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

■ **वापी।** राजगढ़(सादुलपुर) निवासी बेटनोटी, उड़ीसा प्रवासी ललित जैन (मुसरफ) के सुपुत्र एवं राकेश एवं जयश्री जैन के नवजात शिशु का नामकरण जैन संस्कार विधि द्वारा सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम को जैन संस्कारक संजय भंडारी एवं कुलदीप कोठारी ने संपादित करवाया।

■ **पूर्वांचल कोलकाता।** तेरापंथ युवक परिषद्, पूर्वांचल कोलकाता द्वारा राजलदेसर निवासी पूर्वांचल कोलकाता प्रवासी, हेमराज बैद-सरिता बैद के पुत्र नीतीश बैद एवं पुत्रवधू स्निग्धा सेठिया के पुत्र का नामकरण जैन संस्कार विधि से हुआ। जैन संस्कारक सुरेन्द्र सेठिया ने नामकरण का कार्यक्रम संचालित किया।

नूतन गृह प्रवेश

■ **कोशिवाड़ा (राजस्थान)।** कोशीवाड़ा निवासी जसराज छाजेड का नूतन गृह प्रवेश कार्यक्रम जैन संस्कार विधि से समायोजित हुआ। संस्कारक गंभीरमल जैन एवं तोलाराम छाजेड़ ने विधि विधान से जैन संस्कार विधि संपन्न करवाई।

■ **कोशिवाड़ा (राजस्थान)।** कोशिवाड़ा निवासी गणपतलाल छाजेड़ के नूतन गृह का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक गंभीरमल जैन एवं तोलाराम छाजेड़ ने करवाया।

नूतन प्रतिष्ठान

■ **लिलुआ।** सरदारशहर निवासी–लिलुआ प्रवासी अमित जैन (नाहटा) सुपुत्र स्व० बाबूलाल–सुभाग देवी नाहटा के बेलूड़ स्थित व्यावसायिक प्रतिष्ठान का शुभारम्भ जैन संस्कार विधि से संस्कारक मनीष डागा ने सम्पूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द सम्पन्न करवाया।

जिनशासन की दो धाराओं का आध्यात्मिक मिलन

अरिहन्त नगर, दिल्ली।

अरिहन्त नगर के जैन स्थानक में जिनशासन की दो धाराओं का आध्यात्मिक मिलन हुआ। युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की प्रबुद्ध शिष्या साध्वी अणिमाश्रीजी आदि ठाणा एवं श्रमणसंघ की विदुषी साध्वी समताजी म.सा. आदि ठाणा का अद्भुत संगम देखकर श्रावक समाज भावविभोर हो गया।

साध्वी अणिमाश्रीजी ने अपने वक्तव्य में कहा जिस धरती का प्रबल पुण्योदय होता है वहां साधु-संतों के चरणों का स्पर्श पाकर धरती सोना बनकर दमकने लगती है। आज अरिहंत नगर में जिनशासन की दो माणियों का संगम हुआ है जैसे मणि अपने आपमें दुर्लभ होती है, वैसे ही संतों की संगति भी दुर्लभता से प्राप्त होती है। साध्वी उदिताश्रीजी म.सा. ने कहा आज अपनों से अपने मिले हैं। हमने साध्वी अणिमाश्री जी म.सा. का नाम तो बहुत सुना था। प्रधानमंत्री के साथ जो कार्यक्रम हुआ था, उसमें आपका प्रवचन सुना था, तबसे मैं आपसे प्रभावित थी एवं मिलने की इच्छा थी। नियति ने आज मेरी इच्छा पूरी कर दी। हम साथ में मिल बैठकर ज्ञान का आदान-प्रदान करेंगे। श्रावक समाज भी साधु-साध्वियों के जीवन से प्रेरणा लेकर अपनी आत्मा की उज्ज्वलता को बढ़ाए एवं जीवन को आलोक मय बनाए। साध्वी कर्णिकाश्री जी ने कहा जब तक शरीर रूपी पात्र से कषाय का कचरा साफ नहीं होगा, तब तक अध्यात्म रूपी खीर का स्वाद नही आएगा।

डॉ. साध्वी सुधाप्रभा जी ने कहा- जीवन में चिन्ता का नहीं चिन्तन का चिराग जलाओ, व्यथा नहीं व्यवस्था का बाग लगाओ। साध्वी समत्वयशा जी ने सुमधुर गीत का संगान किया।

साध्वी मुदिताश्री जी व साध्वी नमिताश्री जी म.सा. सुन्दर गीत की प्रस्तुति दी। महासभा के कार्यकारिणी सदस्य कमल बैंगाणी, महिला मंडल अध्यक्ष रीता चोराड़िया एवं स्थानवासी समाज से विरेन्द्र जैन ने अपने विचार रखे।

चातुर्मास के लिए नगर प्रवेश

चिकमंगलूरु।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि मोहजीतकुमार जी आदि ठाणा 3 ने सन् 2024 के चातुर्मास के लिए चिकमंगलूरु में नगर प्रवेश किया। संघ के श्रावक-श्राविकाओं ने मुनित्रय की अगवानी करते हुए स्वागत यात्रा के रूप में अपने उल्लास को प्रकट किया।

चिकमंगलूरु प्रवेश के बाद स्वागत समारोह में मुनि मोहजीतकुमार ने कहा कि परम श्रद्धेय आचार्य श्री महाश्रमणजी से आशीर्वाद लेकर मुम्बई से चिकमंगलूर पहुंच गए।

मुनिश्री ने सभी संस्थाओं को साथ लेकर दायित्व के प्रति सजग रहने की प्रेरणा प्रदान करते हुए चातुर्मास काल में पंचाचार की आराधना में सक्रिय पुरुषार्थ करने का आह्वान किया।

मुनि भव्यकुमार जी ने कहा कि हमारा आचार-विचार पवित्रता के शिखर पर पहुंचे। इसके लिए आत्म भावों से भावित होना आवश्यक है। मुनि जयेशकुमार जी ने अपने संसार पक्षीय ज्ञातिजनों के क्षेत्र चिकमंगलूरु में आगमन के अवसर पर चार निक्षेपों की व्यावहारिक व्याख्या करते हुए कहा कि सभी श्रावक-श्राविकाओं को अध्यात्म के भावों से आत्म उज्ज्वलता की शक्ति को अर्जित करना है।

इस अवसर पर तेरापंथी सभा के पूर्व अध्यक्ष ताराचन्द सेठिया वर्तमान अध्यक्ष महेन्द्र डोसी, जयप्रकाश गादिया, सुरेंद्र गादिया आदि ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी ।

265वें तेरापंथ स्थापना दिवस पर विशेष

फौलादी संकल्प के धनी थे आचार्य भिक्षु

● मुनि कमल कुमार ●

अनुस्रोत गामी बनना आसान है, प्रतिस्त्रोत गामी बनना कठिन ही नहीं महाकठिन है। आचार्य भिक्षु प्रवाह पाती नहीं थे। आचार्य भिक्षु ने पूज्य रघुनाथजी से वि. सं. 1808 में मारवाड़ के बगड़ी नगर में नदी किनारे वटवृक्ष के नीचे दीक्षा स्वीकार की। उस समय पूज्य रघुनाथजी ने अयाचित आशीर्वाद दिया कि इस वटवृक्ष की तरह तेरा विकास हो।

भीखणजी ने सोचा मात्र साधु बनने से या वेष परिवर्तन मात्र से इतना बड़ा आशीर्वाद सफल नहीं हो सकता। उसके लिए साधना की आवश्यकता है। वे निरंतर समिति-गुप्ति की आराधना में विशेष जागरूक रहते हुए अध्ययन में लीन बने। उन्होंने आगमों का तलस्पर्शी अध्ययन प्रारंभ कर दिया। आगम पढ़ने से मन में जिज्ञासाओं का ज्वार सा उमड़ आया और आप पूज्य रघुनाथजी की उपासना में उनका समुचित समाधान पाने में तत्पर रहते।

रघुनाथजी भीखणजी की जिज्ञासाओं को सुनकर सोचने लगे- लगता है यह पापभीरु है आज तक हमने इन बातों पर ध्यान नहीं दिया परंतु इसकी जिज्ञासाएं निरर्थक नहीं है। तथ्य भरी जिज्ञासाओं को सुनकर वे अत्यंत प्रसन्न हुए परंतु उनका सही समाधान करने में उन्हें संकोच हुआ क्योंकि उन तथ्यों पर कभी ध्यान ही नहीं दिया तो पालन भी कैसे किया जाये? भीखणजी तटस्थ भाव से अध्ययन में लगे रहे उनकी गुरु के प्रति विनम्रता और साधुचर्या की निर्मलता जन-जन को प्रभावित करने वाली थी। भीखणजी साधना और अध्ययन में आगे बढ़ते रहे इसीलिए वे जन आस्था के आधार बने।

राजनगर के लोग आचार्य रघुनाथजी के परम भक्त थे। वहां प्रवासित साधुओं के संपर्क में आने से उन्हें साधुचर्या का सही बोध हुआ और वे वर्तमान में चल रहे शिथिलाचार के कारण अनास्थाशील हो गए। इस बात की जब आचार्य रघुनाथजी को जानकारी मिली तो उन्होंने अपने योग्य शिष्य भीखणजी को उन्हें प्रतिबोध देने के लिए भेजा।

संत भीखणजी का आगमन सुनकर राजनगर के श्रावक अत्यंत प्रसन्न हुए। भीखणजी के प्रवचन उपासना में लोगों का तांता लग गया क्योंकि भीखणजी के प्रति सबके मन में गहरी आस्था थी। एक बार भीखणजी ने वहां के प्रमुख श्रावकों से चर्चा वार्ता की कि आपके यहाँ से यह बात गुरुदेव के पास कैसे गई की राजनगर के श्रावक आस्थाहीन हो गए हैं? श्रावकों ने अपना कथन स्पष्ट करते हुए कहा कि आज शिथिलाचार बढ़ गया है सब साधु-साध्वी अपने-अपने चेले चेली बनाने में, पंगत बढ़ाने में लगे हुए हैं। केवल आगमों की दुहाई देते हैं, क्या आगमानुसार साधुचर्या का पालन होता है? हमें आप पर पूरा विश्वास है आप हमें आगम पढ़कर बतायें, अगर हमारा कथन गलत है तो हम अपनी भूल सुधारेंगे और अगर आप आगम सम्मत साधुचर्या का पालन नहीं करते हैं तो आप अपने को सुधारें ताकि साधुत्व और श्रावकत्व का सही ढंग से पालन हो सके। श्रावकों की बात सुनकर भीखणजी ने दो-दो बार आगम पढ़े और उन्हें लगा कि आगम सम्मत साधुत्व का पालन नहीं हो रहा है। उन्होंने जब गुरुदेव के दर्शन किए तब राजनगर के श्रावकों की सही स्थिति रखते हुए आगम पाठ पर चिंतन करने का निवेदन किया। परंतु रघुनाथजी ने कोई समुचित उत्तर नहीं दिया। दो वर्षों तक गुरु शिष्य की साध्वाचार विषय में चर्चा चलती रही परंतु जब गुरुदेव ने यह कह दिया कि भीखण यह पंचम आरा है इसमें शुद्ध साधुत्व का पालन नहीं हो सकता तब भीखणजी ने चैत्र शुक्ला नवमी वि. सं. 1817 में बगड़ी नगर से अभिनिष्क्रमण किया। उस समय भयंकर विरोध का सामना करना पड़ा। रहने को स्थान और जीवन यापन के लिए आहार पानी भी मिलना कठिन था। परंतु संत भीखणजी के फौलादी संकल्प के कारण आज तेरापंथ का जो रूप खिला है यह सबके लिए प्रेरणा है।

पूरे जैन समाज में एक तेरापंथ धर्म संघ ही ऐसा है जिसमें एक गुरु एक विधान दृष्टि गोचर हो रहा है। इस धर्म संघ की आज एकादशवीं पीढ़ी चल रही है। प्रत्येक आचार्य ने अपनी चिंतन शक्ति से इसे खूब संवारा है। परंतु इसकी मौलिक मान्यताओं में किसी ने परिवर्तन नहीं किया।

तेरापंथ की मूल आधार शिला दान-दया है। मिश्र धर्म की इसमें चर्चा ही नहीं है। एक करणी से एक ही काम है। अल्प पाप, बहु निर्जरा को कभी मान्यता नहीं दी। हम तेरापंथी हैं तो हमें अपने सिद्धांतों की जानकारी होनी चाहिए ताकि हम अपनी संस्कृति और संस्कारों की सुरक्षा करते हुए औरों को भी संस्कारी बना सकें। स्थापना दिवस पर आचार्य भिक्षु को शत-शत नमन करता हुआ यह कामना करता हूँ कि हम आपके बताए पथ पर निरंतर गतिमान रहें और अपने जीवन को सफल कर सकें।

कुम्भकार की तरह शिष्य को पात्र बनाता है 'गुरु'

● साध्वी रत्नप्रभा ●

गुरु कुम्हार शिष कुंभ है, गढ़ि-गढ़ि काढ़ै खोट।
अन्तर हाथ सहार दै, बाहर बाहै चोट।।

भारतीय साहित्य में गुरु को कुम्भकार की उपमा दी गई है। कुम्भकार का काम बहुत योग्यता व दायित्व भरा होता है। वह कच्ची या अनगढ़ मिट्टी को सुन्दर घट, कलश, दीपक आदि पात्र का आकार देता है, वैसे गुरु भी अनघड़ अबोध शिष्य को ज्ञान, संस्कार, शिक्षा और जीने की कला सिखाकर ऐसा पात्र बना देता है कि वह संसार में श्रेष्ठ बनकर चमकने लगता है।

गुरु का स्थान शिक्षक से बहुत ऊंचा है। गुरु, शिष्य का मार्गदर्शक है, वह शिष्य को अपने समान और अपने से भी ऊंचा बनाना चाहता है, जिस प्रकार एक शिल्पकार पत्थर को तराशकर एक सुन्दर देव प्रतिमा का रूप प्रदान करता है। एक दिन वह मूर्ति को अपने से भी अधिक मान-सम्मान पाने योग्य बना देता है। गुरु भी ऐसा महान शिल्पकार है जो निष्काम भाव से शिष्ट रूपी पत्थर को तराशकर हीरा बना देता है।

शिष्य सदा शिष्य ही बना रहे जैन आगमों में कहा गया है कि गुरु तो महान ही है परन्तु शिष्य को भी उन महान गुरु के प्रति सदा विनय और श्रद्धा का भाव रखना चाहिए। शिष्य में श्रद्धा, समर्पण, विनय और उपकार के प्रति कृतज्ञता की भावना होगी तभी वह गुरु का आशीर्वाद प्राप्त कर सकता है। अगर शिष्य केवलज्ञानी बन जाये और गुरु छद्मस्थ रहे, तब भी शिष्य ज्ञान देने वाले गुरु के प्रति विनयशील और समर्पित रहे। योग्य शिष्य ही गुरु का आशीर्वाद प्राप्त कर सकते हैं।

विनय से मिलता है दुर्लभ रहस्यों का ज्ञान महाभारत का युद्ध घोषित हो चुका था। कुरुक्षेत्र में एक ओर पाण्डव सेना के साथ वासुदेव कृष्ण और दूसरी तरफ कौरवों की विशाल सेना और उनके साथ भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, शल्य, कर्ण आदि। धर्मराज युधिष्ठिर अपने भाईयों के साथ युद्ध भूमि में आते हैं तो सामने भीष्म पितामह आदि को देखकर अपने शस्त्र रथ में रखकर नीचे उतरते हैं, अकेले दुर्योधन की सेना की तरफ चल पड़ते हैं। धर्मराज भीष्म पितामह के पास जाकर प्रणाम करते हैं और कहते हैं- पूज्य पितामह! आपके सामने शस्त्र उठाने का समय आ गया है, यह मेरे मन को बहुत अप्रिय लग रहा है। क्या करूं? विवश हूं। आप हमें युद्ध करने की आज्ञा प्रदान कीजिये।

युधिष्ठिर की विनम्रता से पितामह बोले- धर्मराज! तुम वास्तव में धर्मराज हो। मैं तुमसे प्रसन्न हूं। तुमने हमारी गौरवमयी परम्परा को अक्षुण्ण रखा है। यदि तुम इस प्रकार नम्रतापूर्वक मुझसे युद्ध की आज्ञा नहीं लेने आते तो मैं अवश्य ही तुम्हारी पराजय की कामना करता, परन्तु तुम्हारी नम्रता और धर्मशीलता ने मुझे विवश कर दिया, मैं तुम्हें विजयी होने का आशीर्वाद देता हूं।

युधिष्ठिर वहां से द्रोणाचार्य के पास आये और दण्डवत् प्रणाम करके बोले- 'गुरुदेव! विवश होकर हमें आपसे युद्ध करना पड़ रहा है, आप हमें युद्ध की आज्ञा दीजिये और आशीर्वाद भी।' द्रोणाचार्य ने भी धर्मराज को विनम्रता से देखकर 'विजयी भवः' का आशीर्वाद दिया। इसी प्रकार कृपाचार्य और शल्यराज, जो युधिष्ठिर के मामा भी थे और महारथी कर्ण के सारथी भी, उनसे भी युद्ध की आज्ञा और विजय का आशीर्वाद प्राप्त कर लिया। कृपाचार्य ने भी अपनी मृत्यु का रहस्य युधिष्ठिर को बता दिया और कहा- मैं प्रतिदिन भगवान से तुम्हारी विजय के लिए प्रार्थना करता रहूंगा। इस प्रकार गुरुजनों को प्रणाम करके युधिष्ठिर ने अपनी नम्रता से ही महाभारत का आधा युद्ध जीत लिया।

महाभारत का यह प्रसंग गुरुओं से आशीर्वाद और अज्ञेय रहस्य प्राप्त करने का रहस्य खोलता है, वहीं यह भी दर्शाता है कि शिष्य की नम्रता और श्रद्धा भावना पर प्रसन्न होकर गुरु भी ज्ञान का गूढ़तम रहस्य बता देते हैं।

ऋषि वशिष्ठ ने गुरु की महिमा के बारे में कहा है- आत्मा में अनन्त ज्ञान है, अनन्त शक्तियां हैं परन्तु इस ज्ञान और शक्ति को जागृत करने का मार्ग बताने वाले एकमात्र 'गुरु' हैं। हम सबको ज्ञात है कि अपना मुंह अपनी आंखों से नहीं दिखाई देता उसके लिए दर्पण की जरूरत पड़ती है, यही स्थिति हमारी आध्यात्मिक जगत से है। अपने दोष, दुर्गुणों को देखने, उनका परिष्कार करने व संस्कारी बनने के लिए गुरु की आवश्यकता पड़ती है। गुरु का अर्थ जिसने स्वयं अपनी आत्मा का परिष्कार किया, अपनी शक्तियों को जगाया।

उपनिषद् में कहा गया है-

'गुरुपदेशतोज्ञेयं न च शास्त्रार्थकोटिभिः'।

आत्मविद्या का ज्ञान गुरु से ही सीखा जा सकता है, केवल करोड़ों शास्त्र पढ़ने से वह ज्ञान नहीं मिलता।

जैनाचार्यों ने भी कहा है- गुरु जीवनरूपी खलिहान की मेढ़ी है। गुरु सहारा है, आलम्बन है, वृक्ष के आलम्बन से लताएं ऊपर चढ़ती है, इसी प्रकार गुरु का आलम्बन पाकर शिष्य साधनारूपी वृक्ष पर चढ़ता है।

कहते हैं-

Hard work is like stairs ad Luck is like a lift. Sometimes lift may fail but stairs will always take you to the top without failure. गुरु भी सीढ़ी की तरह हैं जो हमें सीधा आरोहण कराते हैं।

किसी जिज्ञासु ने पूछा- किं दुर्लभम्?

तत्त्वज्ञानी ने उत्तर दिया- 'सद्गुरुरस्ति लोके दुर्लभः', अर्थात् इस विश्व में सद्गुरु का मिलना दुर्लभ है। कहा गया है- Millions of stars can't give brightness, they can only sparkle. But one moon can give the brightness. Guru is like the moon to give brightness even in the dark side of our life.

हम बहुत सौभागी है कि हमें गुरु के रूप में भिक्षु स्वामी मिले। आज तेरापंथ धर्मसंघ का जो विशाल वटवृक्ष फल-फूल रहा है, वह आचार्य भिक्षु की देन है। आचार्य भिक्षु सूरज की तरह तेजस्वी, चंद्रमा की तरह शीतल, वज्र की तरह कठोर और गुलाब की तरह कोमल थे। आचार्य भिक्षु सत्य के भक्त, रुढ़िवाद के विरोधी, पद-प्रतिष्ठा से दूर, कुशल धर्माचार्य, अनुभवी शासक, स्पष्टवादी, जन उद्धारक आचार्य थे। ऐसी अनेक और विशेषताएं है, जिन्हें शब्दों में समेट नहीं सकते।

गणाधिपति पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी के महाप्रयाण दिवस पर विविध आयोजन

दिल्ली

तेरापंथ के नवमाधिशास्ता पूज्य गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी के 28वें महाप्रयाण दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में सान्निध्य प्रदान करते हुए डा. साध्वी कुन्दनरेखाजी ने कहा कि आचार्य तुलसी विकास के प्रेरणा पुरुष थे। उन्होंने तेरापंथ धर्मसंघ को अनेकों आयाम दिए। इस अवसर पर साध्वी सौभाग्ययशा, साध्वी कल्याणयशा समणी जयन्तप्रज्ञा, समणी सन्मतिप्रज्ञा ने आचार्य तुलसी के जीवन दर्शन पर प्रकाश डाला। मंगलाचरण मध्य दिल्ली महिला मंडल ने तथा आचार्य तुलसी के अवदानों पर एक झांकी दक्षिण दिल्ली महिला मंडल ने प्रस्तुत की। दिल्ली सभा की ओर से उपाध्यक्ष गिरीश जैन, तेयुप की ओर से अमित डुंगरवाल, मध्य दिल्ली महिला मण्डल की अध्यक्षा दीपिका छल्लाणी, टी.पी.एफ. व भगवान महावीर मेमोरियल से सम्पतमल नाहटा, अणुव्रत न्यास के डालमचन्द बैद, अणुविभा के मुख्य न्यासी तेजकरण सुराणा आदि ने आचार्य तुलसी के महान अवदानों पर प्रकाश डाला। खटेड़ परिवार के सदस्य प्रदीप खटेड़ ने गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन दिल्ली सभा के महामंत्री प्रमोद घोड़ावत व आभार ज्ञापन मंत्री विकास बोथरा ने किया।

नार्थटाउन, चेन्नई

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल के तत्वावधान में तेरापंथ महिला मण्डल की आयोजना में एवं नार्थटाउन तेरापंथ परिवार के प्रायोजकत्व में साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी ठाणा 4 के सान्निध्य में 'विसर्जन दिवस' मनाया गया। साध्वीश्री ने कहा कि मोमबत्ती स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाश देनी है, सोना तपकर चमक को प्राप्त होता है, चंदन घिसने पर खुशबू प्रदान करता है। आचार्य श्री तुलसी का जीवन भी मोमबत्ती, स्वर्ण और चंदन के समान था। आचार्य तुलसी ने समयानुकूल व्यक्ति, संघ एवं समाज विकास के लिए अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, नयामोड़ इत्यादि अनेकों अवदान दिये। आप विशाल व्यक्तित्व, विराट कर्तृत्व के धनी थे। आपने आचार्य पद छोड़, अपने उत्तराधिकारी को आचार्य पद देकर विश्व को विसर्जन का महान सूत्र दिया। आपके जीवन को शब्दों में बांधना, गीतों में गूंथना बहुत मुश्किल है। साध्वी मयंकप्रभाजी ने कहा- आचार्य श्री तुलसी युगदृष्टा, भविष्यदृष्टा, आत्मदृष्टा पुरुष थे। वे सिर्फ तेरापंथ के आचार्य ही नहीं, एक राष्ट्र संत थे। साध्वी मेरुप्रभाजी एवं साध्वी दक्षप्रभाजी ने भाव पूर्ण गीतिकाओं की प्रस्तुत दी। तेरापंथ महिला मण्डल चेन्नई ने तुलसी अष्टकम से मंगलाचरण किया। नार्थटाउन अध्यक्ष दिलीप गोलेच्छा एवं अनेकों गणमान्य व्यक्तियों ने अपने विचार व्यक्त किए। नार्थटाउन महिलाएं, तुलसी संगीत मण्डल, नार्थ टाउन तेरापंथ परिवार के पुरुषों की सुमधुर गीतिकाओं ने कार्यक्रम में रंग भर दिया। मंच संचालन व आभार ज्ञापन नार्थटाउन तेरापंथ परिवार के मंत्री पुखराज पारख ने किया।

अमराईवाड़ी

आचार्य श्री तुलसी के महाप्रयाण दिवस कार्यक्रम में साध्वी मधुस्मिताजी ने कहा- आचार्य तुलसी युगपुरुष ज्योतिर्धर महापुरुष थे, जिन्होंने अणुव्रत आंदोलन द्वारा नैतिकता का सिंहनाद किया। पूरे भारत वर्ष में भ्रमण कर मानव को मानवता का पाठ पढाया। साध्वी काव्यलताजी ने अपने वक्तव्य में कहा - आचार्य तुलसी तेरापंथ के विकास पुरुष थे। आपने अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान के द्वारा शांति और तनाव मुक्ति का संदेश दिया। साध्वी सुरभिप्रभाजी, साध्वी सहजयशाजी, साध्वी प्रदीपप्रभाजी व साध्वी राहतप्रभाजी ने मधुर गीत का संगान किया। साध्वी प्रदीपप्रभाजी, तेयुप अमराईवाड़ी अध्यक्ष मुकेश सिंघवी, सभा मंत्री निर्मल ओसवाल, सीपीएस जोनल ट्रेनर सुरभि चंडालिया, तेरापंथ महिला मंडल की बहनों ने गीत एवं वक्तव्य के द्वारा गुरुदेव तुलसी को श्रद्धा समर्पित की। नवरंगपुरा सभा अध्यक्ष सुरेश दक एवं अपूर्व मोदी ने अपने विचारों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन साध्वी सहजयशाजी ने किया।

कालू

तेरापंथ भवन में साध्वी उज्जवलरेखाजी के सान्निध्य में गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी का 28वां महाप्रयाण दिवस मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री द्वारा मंगलाचरण से हुई। साध्वीश्री उज्जवलरेखाजी ने अपने वक्तव्य में कहा कि गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी ऐसे संत थे जिन्होंने अपने चरणों से धरती व चिंतन से आकाश को मापने का प्रयास किया। उनका बाह्य व्यक्तित्व जितना सुंदर था उतना ही आंतरिक व्यक्तित्व सुंदर था। आचार्य श्री तुलसी का शासनकाल विकास का स्वर्णिमकाल रहा। उन्होंने महिला समाज को एक नए शिखर पर पहुंचा दिया है। भारत के राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की पुस्तक लिविंग इन परपज में 16 महान व्यक्तियों के बारे में बताया है जिनमें एक व्यक्ति आचार्य श्री तुलसी हैं।

साध्वी हेमप्रभाजी ने कविता के माध्यम से श्रद्धांजलि अर्पित की। अमीषा लोढ़ा और बुद्धमल लोढ़ा ने अपने विचारों को रखा। साध्वी अमितप्रभाजी ने आचार्य श्री तुलसी के दर्शकों की यात्रा को बताते हुए कार्यक्रम का सुंदर संचालन किया। इस अवसर पर जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा और तेरापंथ युवक परिषद् की नूतन टीम का शपथ ग्रहण कार्यक्रम भी आयोजित हुआ। इसमें सभा के अध्यक्ष पद पर बुद्धमल लोढ़ा, उपाध्यक्ष- बजरंग सांड एवं नगराज बोरड़, मंत्री रतनलाल बांठिया, सहमंत्री चैनरूप बोथरा, कोषाध्यक्ष विमल दुगड़, प्रचार प्रसार मंत्री भभूतमल सोलंकी समेत कार्यसमिति सदस्यों ने शपथ ग्रहण की। तेरापंथ युवक परिषद में अध्यक्ष पद पर किशन तातेड़ और मंत्री पर सुमित सांड ने शपथ ग्रहण की। महासभा के कार्यसमिति सदस्य विनोद सिंघी ने शपथ ग्रहण करवाई।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ के 105वें जन्म दिवस पर विविध आयोजन

छोटी खाटू

'शासनश्री' साध्वी कमलप्रभाजी के पावन सान्निध्य में छोटी खाटू सभा भवन में परम पूज्य आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का 105 वां जन्मदिवस बड़े उत्साह के साथ समायोजित किया गया। साध्वी कमलप्रभाजी ने अपनी भावांजलि अर्पित करते हुए कहा कि 'पूरा विश्व उसी का जन्मदिन मनाता है जो अपने जीवन का अमूल्य समय मानव कल्याण के लिए अर्पित कर देता है आचार्य महाप्रज्ञजी का कद जितना ऊंचा था उससे भी ऊंचा उनका व्यक्तित्व एवं कर्तव्य था।' साध्वीश्री ने आचार्यवर के जन्म के समय की सामाजिक परंपराओं की चर्चा करते हुए आचार्यश्री के उपशांत, योग साधना, प्रखर विद्वता और विद्वानों की दृष्टि में आपके विशिष्ट स्थान की भी जानकारी दी। इस अवसर पर तेरापंथ सभा के अध्यक्ष डालमचंद धारीवाल ने आचार्यश्री के महान कर्तव्य, और अवदानों की चर्चा की। पूर्व सभा अध्यक्ष ताराचंद धारीवाल ने अपने संस्मरणों के माध्यम से आचार्यवर की करुणा का स्मरण कराया। साध्वीवृंद ने सामूहिक गीतिका प्रस्तुत की। साध्वी जगतयशाजी ने आचार्यवर की अज्ञ से प्रज्ञ, प्रज्ञ से महाप्रज्ञ की यात्रा को रोचक संस्मरणों से उजागर किया। कार्यक्रम का मंगलाचरण सहमंत्री विकास सेठिया ने एवं कार्यक्रम का संचालन साध्वी आरोग्ययशा जी ने किया।

मैसूरु

साध्वी सयंमलता जी ने प्रज्ञा दिवस पर श्रावकों को संबोधित करते हुए कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ का अवतरण विद्या, विनय और विवेक की समन्विति का अवतरण था, श्रद्धा व संस्कृति का अवतरण था, अनुग्रह व आस्था की अभिव्यक्ति का अवतरण था, प्रज्ञा व पुरूषार्थ की प्रगति का अवतरण था। आचार्यश्री महाप्रज्ञ ऋतम्भरा प्रज्ञा के धनी, आशु कवि, अन्वेषक, युगीन समस्याओं के समाधायक पुरूष थे। 21वीं सदी को प्रभास्वर बनाने वाले आचार्यश्री महाप्रज्ञ व्यक्ति नहीं विचार थे। कार्यक्रम का शुभारंभ तेयुप द्वारा मंगलाचरण एवं सास बहू के जोड़े द्वारा महाप्रज्ञ गुरु वन्दना प्रस्तुति से हुआ। साध्वी रौनकप्रभाजी ने कहा आचार्य महाप्रज्ञ जी पॉलीमैथ व्यक्ति थे। व्यक्तिगत, व्यावसायिक, पारिवारिक, सामाजिक या राष्ट्रीय सबकी समस्याओं का समाधान आचार्य महाप्रज्ञ जी के साहित्य में मिलता है। साध्वी मनीषप्रभा जी ने कहा – आचार्य महाप्रज्ञ जी विश्वसंत थे। विनम्रता के बेजोड़ उदाहरण थे। साध्वी मार्दवश्रीजी ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए आचार्य महाप्रज्ञ जी के जीवन प्रसंगों को बड़े ही रोचक ढंग से प्रस्तुत किया। तेरापंथ सभा भवन मैसूरु में सदियों की अमूल्य धरोहर महाप्रज्ञ वांग्मय की प्रदर्शनी लगाई गई एवं पीपीटी के माध्यम से उसकी महत्ता बताई गई। अनेक भाई बहनों ने आचार्य श्री के साहित्य का वर्ष में स्वाध्याय करने का संकल्प किया।

चेन्नई

डॉ. साध्वी गवेषणाश्रीजी के सान्निध्य में आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का 105वां जन्मदिवस 'प्रज्ञा दिवस' का कार्यक्रम जैन स्थानक, रेडहिल्स, चेन्नई में मनाया गया। साध्वीश्री ने कहा कि व्यक्ति जन्म से नहीं, कर्म से महान बनता है। महानता का स्रोत व्यक्ति के कर्तृत्व से फूटता है। कर्तृत्व की प्रखरता से व्यक्ति जिन नए आयामों को आकार देता है, उनसे व्यक्तित्व बनता है।

इसी कर्तृत्व और व्यक्तित्व के महान धनी थे- आचार्यश्री महाप्रज्ञजी। बचपन से ही आपको 4 चीजें बहुत पसंद थी- कंघा, टॉर्च, घड़ी और दर्पण। कंघा से सिर्फ अपने बालों को ही नहीं संवारा, अपितु समाज की उलझी हुयी गुत्थियों को भी सुलझाया। टॉर्च के द्वारा स्व-पर प्रकाशक बने, घड़ी के द्वारा टाइम मैनेजमेन्ट का सूत्र दिया और दर्पण से आत्मदर्शन का सूत्र दिया। साध्वी मयंकप्रभा ने कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का जीवन समर्पण, पुरुषार्थ और निश्छल व्यक्तित्व की गाथा है। आपके दार्शनिक स्वरूप ने सत्य के अनेक कोणों का उद्घाटन कर विश्व के वैचारिक क्षेत्र में एक नई संभावना को जन्म दिया। साध्वी मेरुप्रभाजी ने सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की। कार्यक्रम की शुरुआत रेडहिल्स तेरापंथ समाज की बहनों के मंगलाचरण से हुई। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष रमेश डागा ने आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के जीवन दर्शन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उन्होंने जैन समाज एवं मानव जाति को प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान का उपहार देकर अध्यात्म परंपरा के नव रहस्यों का अन्वेषण किया।

गौतमचंद सेठिया ने कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने अपने संकल्पबल, आत्मबल, समर्पणबल, संयमबल, चिन्तन और प्रतिभा से तेरापंथ संघ में नव आयाम उद्घाटित किए। तेयुप चेन्नई उपाध्यक्ष कोमल डागा, माधावरम् ट्रस्ट के प्रबंध न्यासी घीसूलाल बोहरा, उत्तर चैन्नई तेरापंथ सभाध्यक्ष इंदरचंद डूंगरवाल ने अपने विचार रखे। सुनीता एवं संगीता डागा ने भावपूर्ण शब्दचित्र प्रस्तुत किया। आभार ज्ञापन गणपतराज डागा ने किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी दक्षप्रभा ने किया।

संबोधि

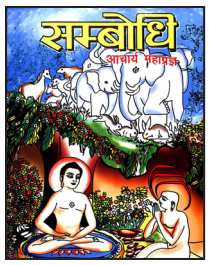

गृहस्थ-धर्म प्रबोधन

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

त्यागी वह नहीं है जिनके पास वस्त्र, गंध, अलंकार, स्त्री, शय्या आदि भोग-सामग्री नहीं है किन्तु त्यागी वह है जो प्राप्त भोग-सामग्री को विरक्त होकर ठुकराता है। पदार्थों के प्रति फिर उसका कोई आकर्षण नहीं रहता। भगवान् महावीर से पूछा- 'भगवन् ! प्रत्याख्यान से आत्मा को क्या प्राप्त होता है?

भगवान् ने कहा-'त्याग से व्यक्ति वितृष्ण हो जाता है। मन को भाने वाले और न भाने वाले पदार्थों में उसका राग-द्वेष नहीं रहता।'

'उल्लो सुबको य दो छूढा, गोलिया मट्टिया मया।
दोवि आवडिया कुड्डे, जो उल्लो सो तत्थ लग्गई।।'

(उत्तर० २५/४०)

'सूखे और गीले दो मिट्टी के गोले हैं। दोनों को भीत पर फेंका जाता है, जो सूखा होता है वह भीत पर नहीं चिपकता, किन्तु जो गीला है वह चिपक जाता है।'

यह आसक्ति का स्वरूप है। आसक्ति स्नेह है। स्नेह पर रजकण चिपकते हैं, अनासक्त पर नहीं। वस्तुएं निर्जीव हैं, उनमें न बंधन है और न मुक्ति। बंधन व मुक्ति आशा और अनाशा में है।

५. पदार्थत्यागमात्रेण, त्यागी स्याद् व्यवहारतः।
आसक्तेः परिहारेण, त्यागी भवति वस्तुतः॥

जो व्यक्ति केवल पदार्थों का त्याग करता है, किन्तु उसकी वासना का त्याग नहीं करता वह व्यवहार-दृष्टि से त्यागी है, वास्तव में नहीं। वास्तव में त्यागी वही है जो आसक्ति का त्याग करता है।

६. पूर्णत्यागः पदार्थानां, कर्तुं शक्यो न देहिभिः।
आसक्तेः परिहारस्तु, कर्तुं शक्योऽस्ति तैरपि॥

देहधारियों के लिए पदार्थों का सर्वथा परित्याग करना संभव नहीं होता किन्तु वे आसक्ति का सर्वथा परित्याग कर सकते हैं।

७. यावानाशापरित्यागः, गेहवासिभिः।
क्रियते तावान् धर्मो मया प्रोक्तः, सोऽगारधर्म उच्यते॥

गृहवासी मनुष्य आशा का जितना परित्याग करते हैं, उसी को मैंने धर्म कहा है और वही अगार-धर्म कहलाता है।

शरीर की विद्यमानता में इन्द्रियां हैं और इन्द्रियों की सत्ता में विषयों का ग्रहण भी। किन्तु ये अपने आप में बंधनकारक नहीं हैं। बंधन का निमित्त है-आशा, इच्छा, अनुराग और आसक्ति। व्यक्ति इन्द्रिय विषयों से उपरत नहीं हो सकता लेकिन उनमें जो आकर्षण है, इच्छा है, उसे वह छोड़ सकता है। आशा-त्याग ही धर्म है। गीता का अनासक्त योग और जैन धर्म का आशा-त्याग एक ही है। किसी भी देहधारी आदमी के लिए कर्म का पूर्ण त्याग कर देना असंभव है। परन्तु जो कर्मों के फलों को त्याग देता है वही त्यागी कहलाता है। आसक्ति त्याग का जिस मात्रा में अभ्यास है उसी मात्रा के अनुसार आत्मा धर्म या मोक्ष के सन्निकट है।

८. सम्यक्श्रद्धा भवेत्तत्र, सम्यक्ज्ञानं प्रजायते।
सम्यक्चारित्रसम्प्राप्तेः, योग्यता तत्र जायते।।

जिसमें सम्यक्-श्रद्धा होती है, उसी में सम्यक् ज्ञान होता है और जिसमें ये दोनों होते हैं उसी में सम्यक् चारित्र की प्राप्ति की योग्यता होती है।

(क्रमशः)

श्रमण महावीर

ध्यान की व्यूह-रचना

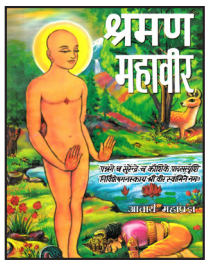

'क्या शरीर-धारण के लिए नींद लेना जरूरी नहीं है?'

'है, इसीलिए भगवान चिर जागरण के बाद क्षण-भर नींद ले लेते थे।[2]

'क्या उन्हें नींद नहीं सताती थी?'

'ग्रीष्म और हेमंत ऋतु के दिनों में कभी-कभी नींद सताने लग जाती। एक बार रात को नींद ने आक्रमण जैसा कर दिया, तब भगवान् ने क्षण-भर नींद ली, फिर ध्यान में आरूढ़ हो गए।

नींद आने के चार कारण माने जाते हैं- थकान, एकाग्रता, शून्यता और शिथिलीकरण। भगवान् एकाग्रता और शिथिलीकरण दोनों की साधना करते, फिर वे नींद के आक्रमण से कैसे बच पाते?

'भगवान् की एकाग्रता और शिथिलीकरण के नीचे आत्मोपलब्धि की तीव्र भावना सक्रिय थी। इसलिए नींद उन्हें सहज ही आक्रान्त नहीं कर पाती।'

'भगवान ने ध्यान से नींद को जीता या उससे नींद की पूर्ति की?'

'भगवान् खड़े-खड़े ध्यान करते थे। कभी-कभी टहल लेते थे। इन साधनों से वे नींद पर विजय पा लेते थे। भगवान् बहुत कम खाते थे। कायोत्सर्ग बहुत करते थे। इसलिए उन्हें सहज ही नींद कम आती थी। सहज समाधि में प्राप्त तृप्ति नींद की आवश्यकता को बहुत ही कम कर देती थी इसलिए पूर्ति की अपेक्षा नहीं रहती।' 'भगवान् के स्वप्न-दर्शन की कोई घटना ज्ञात नहीं है?'

'नहीं, क्यों?'

'तो मैं जानना चाहता हूं।'

'भगवान् महावीर शूलपाणि यक्ष के चैत्य में ध्यान कर रहे थे। रात के पिछले पहर में (सूर्योदय में मुहूर्त भर बाकी था, उस समय) भगवान् को नींद आ गयी। उसमें उन्होंने दस स्वप्न देखे-'

१. ताल पिशाच पराजित हो गया है।

२. श्वेत पंखवाला बड़ा पुंस्कोकिल।

३. चित्र-विचित्र पंखवाला पुंस्कोकिल ।

४. रत्नमय दो मालाएं।

५. श्वेत गौवर्ग।

६. कुसुमित पद्मसरोवर ।

७. कल्लोलित समुद्र भुजाओं से तीर्ण हो गया है।

८. तेज से प्रज्वलित सूर्य।

९. मानुषोत्तर पर्वत अपनी आतों में आवेष्टित हो गया है।

१०. मेरु पर्वत की चूलिका के सिंहासन पर अपनी उपस्थिति।

- ये स्वप्न देखकर भगवान् प्रतिबुद्ध हो गए?

'संस्कार-दर्शन की घटनाएं क्या ज्ञात हैं?'

ये अनेक बार घटित हुई हैं। शूलपाणि यक्ष की घटना तुम सुन चुके हो। कटपूतना व्यन्तरी और संगम देव की घटना क्या संस्कार-दर्शन की घटना नहीं है?'

साधना का पांचवां वर्ष चालू है। भगवान् ग्रामाक सन्निवेश से शालीशीर्ष आ रहे हैं। उसके बाहर एक उद्यान है। भगवान् उसमें आकर ध्यानस्थ हो गए हैं। माघ का महीना है। भयंकर सर्दी पड़ रही है। ठंडी हवा चल रही है। आकाश कुहासे से भरा हुआ है। सारा वातावरण कांप रहा है। हर प्राणी ऊष्मा और ताप की खोज में है।

(क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

विनम्रता का प्रयोग

आवश्यक सूत्र में भी तैंतीस प्रकार की आशातना का उल्लेख है- अर्हतों की आशातना, सिद्धों की आशातना, आचार्यों की आशातना, उपाध्यायों की आशातना, साधुओं की आशातना, साध्वियों की आशातना, श्रावकों की आशातना, श्राविकाओं की आशातना, देवों की आशातना, देवियों की आशातना, इहलोक की आशातना, परलोक की आशातना, केवलि प्रज्ञप्त धर्म की आशातना, देव, मनुष्य और असुरों की आशातना, सर्वप्राण, भूत, जीव व सत्त्वों की आशातना, काल की आशातना, श्रुत की आशातना, श्रुतदेवता की आशातना, वाचनाचार्य की आशातना, आगमपाठ का विपर्यास, मूलपाठ में अन्य पाठ का मिश्रण, अक्षरों की न्यूनता करना, अक्षरों का आधिक्य करना, पदों की न्यूनता करना, विरामरहित पढ़ना, उच्चारण की अमर्यादा, योगरहितता, योग्य को श्रुत न देना, अयोग्य को श्रुत देना, अकाल में स्वाध्याय करना, उपयुक्त काल में स्वाध्याय न करना, अस्वाध्यायिक में स्वाध्याय करना, स्वाध्यायिक में स्वाध्याय न करना।

दिगम्बर साहित्य में उल्लिखित तैंतीस आशातना का वर्गीकरण इस प्रकार है- धर्मास्तिकाय आदि पांच अस्तिकाय, छह जीवनिकाय, पांच महाव्रत, आठ प्रवचन माता एवं नौ पदार्थ इन तैंतीस तत्त्वों के प्रति अविनय करना, इन पर श्रद्धा न करना, अन्यथा प्ररूपण करना। वहां आशातना के स्थान पर अत्याशातना (अच्चासणा) का प्रयोग है। आधारभूत श्लोक इस प्रकार है-

पंचेव अत्थिकाया, छज्जीवनिकाय महव्वया।
पवयण माउ पयत्था, तेतीसच्चासणा भणिया।।

चारित्र विनय

चारित्र विनय के पांच प्रकार हैं- सामायिक चारित्र, छेदोपस्थापनीय चारित्र, परिहार विशुद्धि चारित्र, सूक्ष्म संपराय चारित्र, यथाख्यात चारित्र। इस पांच प्रकार के चारित्र के प्रति सम्यक् श्रद्धा व इनका सम्यक् प्ररूपण चारित्रे विनय है।

मन विनय

मन विनय के दो प्रकार हैं- प्रशस्त मन विनय और अप्रशस्त मन विनय। प्रशस्त मन विनय के सात प्रकार हैं-

अपापक (सामान्य रूप से पापवर्जित)।

असावद्य (विशेष रूप से क्रोध आदि रहित) आदि।

अप्रशस्त मन विनय के भी सात प्रकार हैं- पापक, सावद्य आदि।

प्रशस्त मन विनय का अर्थ है अपापक आदि में मन का प्रवर्तन तथा अप्रशस्त मन विनय का अर्थ है पापक आदि से मन का निवर्तन।

वाक् विनय

वाक् विनय के भी दो प्रकार हैं- प्रशस्तवाक् विनय और अप्रशस्त वाक् विनय। इनके भी सात-सात प्रकार हैं। वे मन के प्रकारों की भांति ज्ञातव्य हैं। मन के स्थान पर वाक् अवगन्तव्य है।

काय विनय

काय विनय के दो प्रकार हैं- प्रशस्त काय विनय और अप्रशस्त काय विनय। प्रशस्त काय विनय के सात प्रकार हैं-

आगुप्त (संयम सहित) गमन,

आगुप्त स्थान (ठहरना),

आगुप्त निषीदन (बैठना), आगुप्त त्वक्वर्तन (सोना),

आगुप्त उल्लंघन (द्वार आदि को लांघना),

आगुप्त प्रलंघन (विस्तीर्ण खाई आदि को लांघना),

आगुप्त सर्वेन्द्रिय योग युञ्जनता (सब इंद्रिय व्यापारों का प्रयोग), अप्रशस्त काय विनय के सात प्रकार हैं- वे प्रशस्तकाय विनय की भांति ही ज्ञातव्य हैं। केवल 'आगुप्त' के स्थान पर 'अनागुप्त' (संयम रहित) समझना चाहिए। अप्रशस्त से काय का निवर्तन ही काय-विनय प्रतीत होता है।

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री रायचन्दजी युग

मुनिश्री रामोजी (गुंदोच) दीक्षा क्रमांक : 100

मुनिश्री बड़े विनयी, त्यागी-विरागी, उच्चकोटि के तपस्वी और आत्मार्थी साधु थे। आपने उपवास से लेकर आठ दिनों तक की तपस्या बहुत बार की। बड़ी तपस्या का विवरण इस प्रकार है मासखमण/11, 41/1, 42/1, 45/1, 18 वर्षों तक एकान्तर तप किया। तीन वर्षों तक शीतकाल में शीत सहा एवं उष्णकाल में आतापना ली।

– साभार: शासन समुद्र –

जुलाई 2024 सप्ताह के विशेष दिन

24 जुलाई
भगवान श्रेयांसनाथ निर्वाण कल्याणक

27 जुलाई
भगवान अनंतनाथ च्यवन कल्याणक

28 जुलाई
भगवान नमिनाथ जन्म कल्याणक

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र **'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स'** में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. समाचार केवल पीडीएफ फॉर्मेट में इस मेल एड्रेस **abtyptt@gmail.com** पर ही भेजें।

निवेदक
अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

ऑनलाईन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.com

संक्षिप्त खबर

वीतराग पथ कार्यशाला का आयोजन

चेन्नई। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में तेयुप चेन्नई की आयोजना में साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी ठाणा-4 के सान्निध्य में वीतराग पथ कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ सभा भवन, साहूकारपेट में किया गया। साध्वीश्री ने नमस्कार महामंत्र द्वारा कार्यशाला का मंगल शुभारंभ किया। तेयुप साथियों ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। अध्यक्ष दिलीप गेलडा ने स्वागत स्वर प्रस्तुत किए। सभी साध्वीवृन्द ने गीतिका और वक्तव्य से राग से विराग की ओर बढ़ने की प्रेरणा दी।

साध्वी डॉ. गवेषणाश्री ने वीतराग पथ का अर्थ समझाते हुए उस पथ पर गतिशील होने के लिए कोध्र को छोड़ने, धीरज धरने, अपने स्वभाव में रहने इत्यादि बिंदुओं को समझाते हुए कहा कि पानी गर्मी में भाप, ठण्डी में बर्फ, कचरे के मिलने पर गंदा हो जाता है, अपने स्वभाव को छोड़ देता है। वहीं चन्दन घिसने, तोड़ने, जलाने पर भी अपने स्वभाव को नहीं छोड़ता, उसी तरह हमें भी किसी भी परिस्थिति, परिणाम में अपने मूल स्वभाव दया, मैत्री, करुणा, क्षमा इत्यादि को नहीं छोड़ना चाहिए।

मंत्री कोमल डागा ने कार्यक्रम का संचालन किया। तेयुप द्वारा विभिन्न स्थानों पर चलने वाले मेघा ब्लड डोनेशन ड्राइव के बैनर का लोकार्पण किया गया। उपाध्यक्ष सुधीर संचेती ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

मौलिकता रहे सुरक्षित परिवर्तन सदा अपेक्षित

हैदराबाद। अभातेममं के निर्देशानुसार गुरुदेव श्री तुलसी का 28वां महाप्रयाण दिवस 'विसर्जन दिवस' तेरापंथ महिला मंडल, हैदराबाद के तत्वावधान में 'शासनश्री' साध्वी शिवमाला जी के सान्निध्य में बोलाराम में आयोजित किया गया। बोलाराम की बहनों ने तुलसी अष्टकम का संगान किया। महिला मंडल अध्यक्ष कविता आच्छा एवं संगीता सुराणा ने सभी का स्वागत किया। 'मौलिकता रहे सुरक्षित परिवर्तन सदा अपेक्षित' विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

ब्लड डोनेशन कैम्प का आयोजन

चेन्नई। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद् चेन्नई द्वारा पूरे जून माह में विभिन्न स्थानों पर 'मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव 2024' के अन्तर्गत कैम्प का आयोजन किया गया। तेयुप सदस्यों के साथ अनेकों सामाजिक कार्यकर्ता इस मुहिम से जुड़े। 1 जून से प्रारम्भ तथा 21 स्थानों पर आयोजित शिविरों में 500 से अधिक यूनिट रक्त का संग्रहण हुआ। तेयुप अध्यक्ष संदीप मुथा और निवर्तमान अध्यक्ष दिलीप गेलडा ने सभी का सम्मान किया। चेन्नई ब्लड बैंक, इण्डियन वॉलंटरी ब्लड बैंक का मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के रक्त संग्रहण में योगदान प्राप्त हुआ।

फिट युवा हिट युवा कार्यक्रम का आयोजन

अमराईवाड़ी-ओढव। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद, अमराईवाड़ी-ओढव द्वारा फिट युवा हिट युवा आयाम के अंतर्गत जुम्बा करके मनाया गया। सर्टिफ़ाइड जुंबा ट्रेनर प्रिया सुथार द्वारा आज का सेशन संचालित किया गया। तेयुप अध्यक्ष मुकेश सिंघवी ने स्वागत वक्तव्य दिया। कार्यक्रम के संयोजक लककी पगारिया ने कार्यक्रम की जानकारी दे। जुम्बा ट्रेनर प्रिया ने जुम्बा के साथ बहोत से हेल्थ रिलेटिव टिप्स की जानकारी भी दी। मंत्री सुनील चिप्पड़ ने आभार ज्ञापन किया।

सफल नेतृत्व हेतु आवश्यक है चिन्तन, निर्णय एवं क्रियान्विति

राजाराजेश्वरी नगर, बेंगलुरू।

साध्वी उदितयशाजी की विशेष प्रेरणा से राजाराजेश्वरी नगर के तेरापंथ भवन में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, तेरापंथ युवक परिषद एवं तेरापंथ महिला मंडल के संयुक्त तत्वावधान में 'कार्यकर्ता प्रशिक्षण कार्यशाला' का आयोजन किया गया।

तेरापंथ धर्मसंघ की तीनों मुख्य संस्थाओं के पूर्व व वर्तमान सभी पदाधिकारीगण, कार्यकर्तागण एवं अन्य सदस्यगणों से सुसज्जित कार्यशाला में साध्वीवृन्द ने कार्यकर्ताओं को एक नये परिप्रेक्ष्य से अवगत कराया। साध्वी उदितयशाजी ने कहा संगठन का आधार

कोई भी संस्था बिना नियम, संविधान, अनुशासन, मर्यादा के नहीं हो सकती

अध्यात्म होना चाहिए। सही नेतृत्व नए कार्यकर्ता तैयार करें।

सफल नेतृत्व हेतु तीन बातें आवश्यक है– चिन्तन, निर्णय एवं क्रियान्विति। श्रेष्ठ नेतृत्व वह होता है जो पूर्व अध्यक्ष द्वारा किये गए कार्यों का निरन्तर विकास करे साथ ही गुरु इंगित के साथ नये कार्यों को करते हुए संघ की प्रभावना में वृद्धि करे।

साध्वी संगीतप्रभाजी ने दायित्व बोध में समुच्चारित एक-एक संकल्पों का विश्लेषण करते हुए कहा कि आज आप पद पर हैं, कल कोई और आएगा लेकिन धर्मसंघ के कार्यकर्ता आप आजीवन रहेंगे।

कोई भी संस्था बिना नियम, संविधान, अनुशासन, मर्यादा के नहीं हो सकती। संस्था के पद पर आने वाले व्यक्ति का गरिमामयी होना आवश्यक है।

हमें संघ का आभारी होना चाहिए क्योंकि संघ ने हमें पहचान दी है। हमारे संघ को केवल कार्यकर्ता नहीं श्रावक कार्यकर्ता चाहिए। साध्वी शिक्षाप्रभाजी ने एक सुमधुर गीतिका का संगान किया।

आध्यात्मिक मिलन समारोह आयोजित

उधना।

'शासनश्री' साध्वी जिनरेखाजी एवं साध्वी हिमश्रीजी का तेरापंथ भवन उधना में आध्यात्मिक मिलन हुआ। दोनों सिंघाड़े की 12 साध्वियों के 11 वर्ष की सुदीर्घ अवधि के बाद हुए आध्यात्मिक मिलन के दृश्य निहार कर धर्म पिपासु जनता भाव विभोर हो उठी।

इस अवसर पर आयोजित धर्म सभा को संबोधित करते हुए 'शासनश्री' साध्वी जिनरेखा जी ने कहा - आचार्य श्री महाश्रमण जी की आज्ञा से हम पहली बार उधना पहुंचे हैं।

आजकल लोग चाहते हैं कि हमारे घर में मेहमान ना आएं और आएं तो वापस शीघ्रता से चले जाएं लेकिन तेरापंथ धर्म संघ में उससे बिल्कुल विपरीत स्थिति है।

आज मुझे मेरे अग्रणी दिवंगत साध्वी कमलश्रीजी एवं साध्वी हिमश्रीजी के अग्रणी दिवंगत साध्वी 'शासनश्री' रतनश्रीजी की याद आ रही है। उनके बीच के आत्मीय संबंध हमें प्रेरणा प्रदान करते हैं। आज साध्वी हिमश्रीजी आदि द्वारा हमारा जो स्वागत हुआ है वह आपकी आत्मीयता को दर्शाता है।

साध्वी हिमश्रीजी ने कहा – 'शासनश्री' साध्वी जिनरेखा जी प्रबुद्ध साध्वी हैं। आप अच्छे प्रवचनकार हैं, शांत स्वभावी हैं और मधुर गायिका भी हैं।

मैं आंतरिक प्रसन्नता के साथ उनका स्वागत एवं अभिनंदन करती हूं। आपकी सेवा का अवसर प्राप्त कर हम आनंद की अनुभूति कर रहे हैं। साध्वी रमावतीजी, साध्वी श्वेतप्रभा जी एवं साध्वी वृंद द्वारा भी वक्तव्य एवं गीतिका के द्वारा अपने भावों की प्रस्तुति की गई।

तेरापंथ सभा, उधना के पूर्व अध्यक्ष बसंतीलाल नाहर, महिला मंडल अध्यक्ष सोनू बाफना एवं अणुव्रत विश्व भारती गुजरात प्रभारी अर्जुन मेडतवाल ने प्रासंगिक अभिव्यक्ति की।

निःशुल्क हेल्थ चेक अप कैंप व कैंसर अवेयरनेस सेमिनार का आयोजन

पर्वत पाटिया।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल के तत्वावधान में पर्वत पाटिया द्वारा निःशुल्क हेल्थ चेक अप कैंप और कैंसर अवेयरनेस सेमिनार का आयोजन वरेली गांव में किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की राष्ट्रीय ट्रस्टी कनक बरमेचा द्वारा नमस्कार महामंत्र के सामूहिक संगान से किया गया। मंडल की बहनों के द्वारा प्रेरणा गीत का संगान किया गया। महिला मंडल अध्यक्षा रंजना कोठारी ने सभी आगन्तुकों का स्वागत व अभिनंदन किया। डॉ. मेहुल ने कैंसर के बारे में विस्तृत जानकारी प्रोजेक्टर के माध्यम से दी। साल में कम से कम एक बार चेकअप करवाते रहना चाहिए। इसके लिए हमें हमेशा जागरूक रहना है और अपने आस पास भी यह जागरूकता लानी है।

एबीटीएमएम राष्ट्रीय ट्रस्टी कनक बरमेचा ने अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा कि पर्वत पाटिया महिला मंडल छोटे क्षेत्र में होते हुए भी इतने बड़े पैमाने पर कार्य कर रही है।

गुजरात प्रभारी श्रेया बाफना ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। आभार ज्ञापन मंत्री चेष्टा कदमालिया ने किया।

विभिन्न संस्थाओं का शपथ ग्रहण कार्यक्रम समारोह

इस्लामपुर, प.बंगाल

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा का शपथ ग्रहण जैन संस्कार विधि से संस्कारक प्रमोद सिंघी ने सम्पादित करवाया। सभा के निवर्तमान अध्यक्ष नरेंद्र बैद ने नव निर्वाचित अध्यक्ष कन्हैयालाल बोथरा को पद एवं गोपनीयता की शपथ ग्रहण करवाई। तेयुप मंत्री मुदित पींचा ने सकल श्रावक समाज से जैन संस्कार विधि को अपनाने एवं अधिक से अधिक कार्यक्रम को आयोजन करने का आह्वान किया। सभा कोषाध्यक्ष राकेश लूनिया ने आभार एवं मंच संचालन सभा मंत्री लक्ष्मीपत गोलछा ने किया।

राजाराजेश्वरीनगर

तेरापंथ युवक परिषद राजराजेश्वरी नगर का शपथ ग्रहण एवं दायित्व हस्तांतरण समारोह तेरापंथ भवन राजराजेश्वरी नगर में साध्वी उदितयशाजी के सान्निध्य में आयोजित किया गया। साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत की गई। तुलसी संगीत सुधा के सदस्यों द्वारा विजय गीत का संगान किया गया। अभातेयुप राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पवन मांडोत द्वारा श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया गया। अध्यक्ष विकास छाजेड़ ने सभी का स्वागत कर नवमनोनीत अध्यक्ष बिकास छाजेड़ को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई एवं आगामी कार्यकाल के लिए शुभकामनाएं दी। नवमनोनीत अध्यक्ष बिकास छाजेड़ ने अपनी टीम की घोषणा करते हुए उपाध्यक्ष प्रथम नरेश बांठिया, उपाध्यक्ष द्वितीय धर्मेश नाहर, मंत्री सुपार्श्व पटावरी, सहमंत्री प्रथम सरल पटावरी, सहमंत्री द्वितीय श्रेयांश बेंगानी, कोषाध्यक्ष गौतम नाहटा, संगठन मंत्री संदीप बैद के साथ परामर्शक गण, प्रबुद्ध विचारक एवं कार्य समिति सदस्यों को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। बिकाश छाजेड़ ने कहा कि तेरापंथ युवक परिषद जैसी गौरवशाली संस्था का अध्यक्ष बनना मेरे लिए सौभाग्य की बात है। उन्होंने सभी कार्यकर्ताओं से एकजुट होकर कार्य करने का आह्वान करते हुए सबके सहयोग की कामना की। साध्वीश्री ने तेयुप सदस्यों के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामनाएं देते हुए सभी को संघ हित में कार्य करने की प्रेरणा प्रदान की। अभातेयुप उपाध्यक्ष पवन मांडोत ने नवमनोनीत अध्यक्ष एवं उनकी पूरी टीम को आगामी कार्यकाल के लिए शुभकामनाएं दी। संभाग प्रमुख अमित दक ने परिषद को नए-नए काम करने की प्रेरणा दी। आर.आर. नगर सभा अध्यक्ष राकेश छाजेड़, ट्रस्ट अध्यक्ष मनोज डागा, महिला मंडल अध्यक्षा सुमन पटावरी ने भी नई टीम को बधाई एवं शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर अभातेयुप परिवार, तेयुप आर आर नगर के पूर्व अध्यक्ष, सभा, ट्रस्ट, महिला मंडल, ज्ञानशाला, संघीय संस्थानों ने अध्यक्ष मंत्री, श्रावक समाज आदि की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का सफल संचालन सुशील भंसाली ने किया। आभार ज्ञापन परिषद मंत्री सुपार्श्व पटावरी द्वारा किया गया।

काँटाबांजी

तेरापंथ युवक परिषद काँटाबांजी के आगामी कार्यकाल 2024-25 के लिए अध्यक्ष पद के रूप में विकास जैन को मनोनीत किया गया। समणी जिनप्रज्ञा जी एवं समणी क्षान्तिप्रज्ञा जी के सान्निध्य में परिषद के पदाधिकारीगण, कार्यकारिणी सदस्य एवं अन्य सदस्यों ने अपने अपने पद एवं गोपनीयता और संघ के प्रति समर्पण भाव से काम करने की शपथ ग्रहण की। समणी जी ने सभी सदस्यों को संघ एवं संघपति के प्रति सम्पूर्ण समर्पण भाव से समर्पित रह कर कार्य करने की प्रेरणा दी।

कटक

तेरापंथ युवक परिषद, कटक के सत्र 2024-25 की कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह समणी निर्देशिका कमलप्रज्ञाजी के सान्निध्य में स्थानीय तेरापंथ भवन में आयोजित हुआ। समणीजी के नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। निवर्तमान अध्यक्ष संजय सेठिया ने नव मनोनीत विकाश नौलखा को अध्यक्ष पद की शपथ दिलाई। तत्पश्चात् परिषद अध्यक्ष ने अपनी टीम की घोषणा की एवं टीम को शपथ दिलाई। परिषद अध्यक्ष विकाश नौलखा ने अपने वक्तव्य में गुरुदेव एवं चारित्रात्माओं के इंगित अनुसार सभी कार्य पूर्ण निष्ठा से संपादित करने एवं परिषद के साथियों को चारित्रात्माओं के प्रवास में ज्यादा से ज्यादा धर्म ध्यान करने का आह्वान किया।

समणी निर्देशिका कमलप्रज्ञाजी ने सभी युवकों को नशामुक्त रहने की प्रेरणा दी। समणी करुणाप्रज्ञाजी ने परिषद को गुरुदेव के इंगित अनुसार कार्य करने की प्रेरणा दी। समणी सुमनप्रज्ञाजी ने सुमधुर गीतिका 'संघ अपना प्राण है, संघ अभिमान है' के माध्यम से युवकों को संघ एवं संघपति के प्रति समर्पित होकर कार्य करने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष व कटक परिषद के संस्थापक मंत्री मनसुखलाल सेठिया विशेष रुप से उपस्थित थे। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन महासभा अध्यक्ष द्वारा किया गया। उन्होंने परिषद के साथियों को नशामुक्ति होकर संघ के प्रत्येक कार्य को निष्ठापूर्वक संपादित करने को कहा। परिषद के निवर्तमान अध्यक्ष संजय सेठिया, श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा कटक के निवर्तमान अध्यक्ष मोहनलाल सिंघी, वर्तमान सभा अध्यक्ष मुकेश सेठिया, तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा ललिता सिंघी, कटक मारवाड़ी समाज के मंत्री हेमंत अग्रवाल ने अपनी शुभकामनाएं प्रेषित की। कार्यक्रम का संचालन परिषद परामर्शक चैनरूप चोरड़िया ने किया।

पीतमपुरा, नई दिल्ली

साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में सरस्वती धर्मशाला के प्रांगण में पीतमपुरा सभा के नवमनोनीत अध्यक्ष लक्ष्मीपत भूतोड़िया एवं उनकी टीम तथा दिल्ली उत्तर-मध्य सभा के नवमनोनीत अध्यक्ष प्रसन्न पुगलिया एवं उनकी टीम के शपथ ग्रहण समारोह समायोजित हुआ। साध्वीश्री ने अपने वक्तव्य में कहा कि आज दो सभाओं का एक साथ शपथ ग्रहण हुआ है। यह अपने आप में विशिष्ट बात है एवं सौहार्द एवं समन्वय की गाथा है। महासभा तेरापंथ धर्मसंघ की सर्वोच्च संस्था तथा पूज्य गुरुदेव ने इसे संस्था-शिरोमणी कहा है। महासभा के नेतृत्व में सैकड़ों सभाएं अपने-अपने क्षेत्र में धर्मसंघ की गौरव वृद्धि कर रही है। उनमें पीतमपुरा सभा एवं उत्तर-मध्य दिल्ली सभा का भी महत्वपूर्ण स्थान है। ये सभाएं वर्षों से धर्मसंघ की सेवा कर रही है। साध्वीश्री ने कहा- शपथ ग्रहण सिर्फ कोई रस्म नहीं है बल्कि ये दायित्व बोध के क्षण है। ये पल व्यक्ति के भीतर दायित्व-चेतना को जागृत करने वाले हैं। हर व्यक्ति अपने दायित्व को सिर्फ समझे ही नहीं बल्कि दायित्व निर्वहन का संकल्प कर इस दिशा में कदम बढ़ाए। हम सब धर्मसंघ एवं गुरु के ऋणी हैं। हमारे सामने हरपल धर्मसंघ की सेवा तथा गुरु-सेवा का लक्ष्य रहना चाहिए।

साध्वी कर्णिकाश्रीजी, डॉ. साध्वी सुधाप्रभाजी, साध्वी समत्वयशाजी, साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने 'महाश्रमण का मॉल लगाने साध्वी अणिमाश्रीजी आए हैं' गीत का संगान कर कार्यक्रम में समां बांधा। पीतमपुरा सभा के निवर्तमान अध्यक्ष प्रवीण बैगानी ने लक्ष्मीपत भूतोडिया को अध्यक्ष पद की शपथ दिलाई तथा लक्ष्मीपत भूतोडिया ने अपनी टीम के पदाधिकारियों को शपथ दिलवाई तथा दिल्ली सभा के पूर्व अध्यक्ष पन्नालाल बैद ने कार्यकारिणी सदस्यों को शपथ दिलवाई। अमृतवाणी के उपाध्यक्ष, दिल्ली सभा के परामर्शक शुभकरण बोथरा ने उत्तर मध्य दिल्ली सभा के अध्यक्ष प्रसन्न पुगलिया को शपथ दिलाई तथा प्रसन्न पुगलिया ने अपनी टीम के पदाधिकारियों को शपथ दिलवाई। महावीर मेमोरियल के अध्यक्ष के.एल. जैन ने उनके पदाधिकारियों व कार्यकारिणी सदस्य को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। नव मनोनीत दोनों अध्यक्ष ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए।

उत्तर-दिल्ली महिला मंडल ने स्वागत एवं शुभकामना गीत की सुन्दर प्रस्तुति दी। आभार ज्ञापन पीतमपुरा सभा के मंत्री विरेन्द्र जैन ने किया । मारवाड़ी युवा मंच की ओर से दोनों अध्यक्षों का सम्मान किया गया। सभा की ओर से छगन जम्मड़ का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन दीपक जैन ने किया।

बेंगलुरु

साध्वी उदितयशाजी ठाणा 4 के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद् बेंगलुरु की नव गठित टीम का शपथ ग्रहण समारोह चामराजपेट, बेंगलुरु में आयोजित किया गया। साध्वीवृंद के नमस्कार महामंत्र के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। निवर्तमान अध्यक्ष रजत बैद ने स्वागत वक्तव्य के साथ अपने कार्यकाल में हुए कार्यों की झलक प्रस्तुत की एवं गणमान्य व्यक्तियों को सत्र 2023-24 का प्रगति प्रतिवेदन भेंट किया। अभातेयुप के पूर्व अध्यक्ष विमल कटारिया ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन करवाया। युवा शक्ति ने सामूहिक विजय गीत का संगान किया। जैन संस्कार विधि से मंगल मंत्रोच्चार के साथ शपथ विधि की शुरुआत परिषद के संस्कारकों ने संपादित करवाई। निवर्तमान अध्यक्ष रजत बैद ने नव मनोनीत अध्यक्ष विमल धारीवाल को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। अध्यक्ष विमल धारीवाल ने अपनी टीम की घोषणा कर उन्हें शपथ ग्रहण करवाई।

साध्वी उदितयशा जी ने युवकों को संघपति के प्रतिपूर्ण समर्पित होकर कार्य करने, कार्यकाल की त्यागमय शुरुआत करने एवं एक-दूसरे से सीखने की प्रेरणा दी। साध्वी संगीतप्रभा जी ने युवकों को संगठित होकर कार्य करने की प्रेरणा देते हुए गीत का संगान किया। अभातेयुप पूर्व अध्यक्ष विमल कटारिया, प्रबुद्ध विचारक दिनेश पोखरणा, शाखा प्रभारी अमित दक, तेरापंथ सभा अध्यक्ष पारसमल भंसाली, महिला मंडल अध्यक्षा रिजु डूंगरवाल ने शुभकामना स्वर प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संचालन मंत्री राकेश चोरड़िया एवं रोहित कोठारी ने किया।

साउथ कोलकाता

तेरापंथ युवक परिषद् लिलुआ के नव मनोनीत अध्यक्ष मोहित बैद एवं नव मनोनीत टीम का शपथ ग्रहण का आयोजन मुनि जिनेशकुमार जी के सान्निध्य में उत्तरपाड़ा स्थित गणभवन ऑडिटेरियम में सामूहिक शपथ ग्रहण समारोह में संपन्न हुआ।

फरीदाबाद

तेरापंथ युवक परिषद् फरीदाबाद सत्र 2024-25 के लिए नव मनोनीत तेयुप अध्यक्ष विनीत बैद, पदाधिकारीगण एवं कार्यकारिणी के शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन जैन संस्कार विधि से तेरापंथ भवन के प्रांगण में आयोजित हुआ। समारोह का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ बहादुर सिंह दुगड़ द्वारा कराया गया। विजयगीत का संगान भरत बेगवानी एवं जितेंद्र लूनिया द्वारा किया गया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन निवर्तमान अध्यक्ष गौतम गोलछा द्वारा किया गया। इस अवसर संस्कारक भरत बेगवानी, राजेश जैन, मुकेश बोथरा, जितेन्द्र लूनिया, आलोक सुराना ने जैन संस्कार विधि को संपादित कराया।

निवर्तमान अध्यक्ष गौतम गोलछा द्वारा नव मनोनीत अध्यक्ष विनीत बैद को शपथ दिलाई गई। नव मनोनीत अध्यक्ष ने अपने वक्तव्य में आने वाले सत्र की योजनाएं साझा की। समारोह का संचालन जैन संस्कारक एवं सहमंत्री आलोक सुराना एवं सहमंत्री अभिनव बैद ने किया।

संक्षिप्त खबर

ज्ञानशाला शिविर का आयोजन

भुवनेश्वर। तेरापंथ भवन भुवनेश्वर में समणी कमलप्रज्ञाजी, समणी करुणाप्रज्ञाजी एवं समणी सुमनप्रज्ञाजी के सान्निध्य में एक दिवसीय शिविर का आयोजन तेरापंथ सभा के तत्वावधान में आयोजित किया गया। समणी वृंद के साथ सॉफ्ट स्किल ट्रेनर निहारिका सिंघी द्वारा अनेक प्रकार के क्लासेज और एक्टिविटी कराए गए। सभा अध्यक्ष रणजीत बैद ने सभी का स्वागत किया। तेयुप अध्यक्ष रोशन पुगलिया, तेममं अध्यक्षा प्रेमलता सेठिया ने अपने विचार व्यक्त किए। पूर्व संयोजिका नयनतारा सुखानी ने ज्ञानशाला के बारे में विस्तृत जानकारी दी। संयोजिका संतोष सेठिया ने शिविर के विषय पर प्रकाश डाला और सभी अभिभावकों से बच्चों को ज्ञानशाला भेजने की प्रेरणा दी। प्रायोजक अरुणा सिंघी एवं ट्रेनर निहारिका सिंघी का सम्मान किया गया। धन्यवाद ज्ञापन मुख्य प्रशिक्षिका ममता भंडारी एवं संचालन जितेंद्र बैद ने किया। शिशु संस्कार बोध 2023 के प्रमाण पत्र भी इस अवसर पर वितरित किए गए। ज्ञानशाला शिविर में 68 बच्चों की उपस्थिति रही।

अवर वैल्यू अवर कल्चर कार्यशाला का आयोजन

चेन्नई। डॉ. साध्वी गवेषणाश्रीजी के सान्निध्य में अवर वैल्यू अवर कल्चर कार्यशाला का आयोजन किया गया। साध्वीश्री के नमस्कार महामंत्र के पश्चात अशोक लुणावत ने मंगलाचरण किया। साध्वी दक्षप्रभाजी ने गीतिका का संगान किया। साध्वी डॉ. गवेषणाश्रीजी ने उदाहरणों के माध्यम से समझाया कि हमारी संस्कृति सिखाती है कि जीओ तो ऐसे जीओ की शांति से मर सको और मृत्यु के बाद भी लोग याद करें।

पश्चिमी संस्कृति पक्षी की तरह है जो खुले आकाश में उड़ता है पर उसका कोई लक्ष्य नहीं और हमारी संस्कृति पतंग की तरह है जो आकाश में उड़ाती तो है पर डोर हमेशा हमारे हाथ में रहती है। इसलिए हमें अनुशासनमय जीवन जीना है, बच्चों को सिखाना रहना, कहना, पहनना आदि बातें समझानी है। साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि संस्कारों का बीजारोपण घर से ही होता है, शुरू से ही बच्चों को संस्कार देना चाहिए, अपनी संस्कृति सिखानी चाहिए। साध्वी मेरुप्रभाजी ने गीतिका का संगान किया। माला कातरेला ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। शांति दूधोरिया ने आगामी कार्यक्रम की जानकारी एवं धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी मेरूप्रभाजी ने किया।

कैंसर अवेयरनेस के लिए फ्री चैकअप कैम्प का आयोजन

कोयंबटूर। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देश अनुसार तेरापंथ महिला मंडल कोयंबटूर ने कैंसर अवेयरनेस फ्री चैकअप कैम्प का आयोजन किया। कनकप्रभा बुच्चा ने कार्यक्रम की शुभ शुरुआत नमस्कार महामंत्र व तुलसी अष्टकम से की। महिला मंडल अध्यक्षा मंजू सेठिया ने सभी का स्वागत किया।

इस कैंप में चैकअप के लिए अपनी टीम के साथ पहुंची डॉ. भारती ने समझाया कि कैंसर एक भयावह बीमारी है और यदि इसका पता शुरुआती दौर में ही लग जाता है तो इससे निजात पा सकते हैं। इसीलिए सभी बहनों को जागरू होकर इसकी जांच करवानी चाहिए। लगभग 55 बहनों ने ब्लड टेस्ट करवाए और चिकित्सकों ने उन्हें उचित परामर्श दिया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सभा उपाध्यक्ष धनराज सेठिया व तेरापंथ ट्रस्ट के अध्यक्ष महावीर भंडारी उपस्थित हुए। धन्यवाद ज्ञापन उपाध्यक्ष मोनिका लूनिया ने दिया। कार्यक्रम का संचालन कनकप्रभा बुच्चा ने किया।

विभिन्न संस्थाओं का शपथ ग्रहण कार्यक्रम समारोह

कालू

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के सत्र 2024-26 और तेरापंथ युवक परिषद् के सत्र 2024-25 की टीम का शपथ ग्रहण कार्यक्रम आयोजित किया गया। सभा अध्यक्ष पद पर बुधमल लोढ़ा और मंत्री पद पर रतनलाल बांठिया ने शपथ ग्रहण की। तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष पद पर किशन तातेड़ और मंत्री पर सुमित सांड ने शपथ ग्रहण की।

तिरुपुर

तेरापंथ युवक परिषद तिरुपुर के सत्र 2024-2025 के कार्यकाल के नव निर्वाचित अध्यक्ष एवं उनकी संपूर्ण कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह आचार्य श्री महाश्रमण जी के शिष्य मुनि दीप कुमार जी ठाणा 2 के सान्निध्य में जैन संस्कार विधि से आयोजित हुआ। निवर्तमान अध्यक्ष सोनू डागा ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष मोहित श्यामसुखा को शपथ ग्रहण करवाया।

मोहित श्यामसुखा ने अपनी कार्यकारिणी की घोषणा की एवं उपस्थित सभी सदस्यों को शपथ ग्रहण करवाई। मुनि दीपकुमार जी ने कहा कि जिस समाज में युवक सक्रिय होते हैं उस समाज का शुभ भविष्य सुनिश्चित है। कार्यक्रम का संचालन जैन संस्करक चेतन बरडिया ने किया।

गंगाशहर

तेरापंथ युवक परिषद् गंगाशहर नवगठित कार्यकारिणी का शपथग्रहण समारोह शांति निकेतन में साध्वी चरितार्थप्रभाजी व साध्वी प्रांजलप्रभाजी के सान्निध्य में जैन संस्कार विधि द्वारा आयोजित हुआ। संस्कारकों ने जैन संस्कार विधि से शपथ ग्रहण कार्यक्रम सम्पादित करवाया।

तेरापंथ युवक परिषद् के निवर्तमान अध्यक्ष अरुणकुमार नाहटा ने नवगठित टीम को पद व संविधान की शपथ दिलवाई। महावीर फलोदिया ने अध्यक्ष, ललित राखेचा व देवेंद्र डागा ने उपाध्यक्ष, भरत गोलछा ने मंत्री, मांगीलाल बोथरा व ऋषभ लालाणी ने सहमंत्री, रोशन छाजेड़ ने कोषाध्यक्ष व रोहित बैद ने संगठन मंत्री के पद की शपथ ग्रहण की।

अध्यक्ष फलोदिया ने परामर्शक व कार्यकारिणी सदस्यों की घोषणा की। निवर्तमान अध्यक्ष नाहटा द्वारा नवमनोनीत अध्यक्ष फलोदिया को दायित्व हस्तांतरण किया गया।

इस अवसर पर साध्वी चरितार्थप्रभाजी ने नवगठित कार्यकारिणी को शुभकामना देते हुए कहा कि जहां संगठन होता है, वहां संविधान होता है। संविधान की प्रक्रिया में संगठन में नए-नए व्यक्ति आगे आते हैं व समाज में कार्य करते हैं। उन्होंने विकास के गुर देते हुए गुरु दृष्टि की आराधना करने के लिए प्रेरित किया।

साध्वी प्रांजलप्रभा जी ने कहा कि गुरु के प्रति सर्वात्मना समर्पित होने पर प्रगति का मार्ग स्वतः ही प्रशस्त हो जाता है। सारे कार्य सिद्ध हो जाते हैं। गुरु के आशीर्वाद को ओज आहार मानकर निरंतर संघ प्रभावक कार्य करने की प्रेरणा दी।

तेरापंथ सभा के मंत्री जतन लाल संचेती, आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान के मंत्री दीपक आंचलिया, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा संजू लालाणी, अणुव्रत समिति के मंत्री मनीष बाफना व धर्मेन्द्र डाकलिया ने अपनी शुभकामनाएं व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन देवेंद्र डागा ने किया।

सूरत

बहुश्रुत परिषद सदस्य एवं ज्ञानशाला के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि उदितकुमारजी एवं टीपीएफ के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक डॉ. मुनि रजनीशकुमारजी के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद, सूरत की नवगठित कार्यकारिणी का 'शपथ ग्रहण समारोह' जैन संस्कार विधि से तेरापंथ भवन सिटीलाइट में आयोजित हुआ। इस अवसर पर डॉ. मुनि रजनीशकुमार जी ने कहा कि संगठन में शक्ति है, युवा शक्ति धर्मसंघ में आगे बढ़ने का लक्ष्य बनाए।

मुनि उदितकुमारजी ने कहा कि युवाशक्ति का धर्म संघ की सेवा में अतुलनीय योगदान है। नाम और यश से ऊपर उठकर कार्यकर्ता काम पर ध्यान देकर धर्म संघ की खूब सेवा करें। नमस्कार महामंत्र के मंगल उच्चारण के साथ जैन संस्कार विधि से नवनिर्वाचित अध्यक्ष अभिनंदन गादिया एवं नवीन टीम का शपथ ग्रहण कार्यक्रम आयोजित किया गया। अभातेयुप राष्ट्रीय संगठन मंत्री अमित सेठिया एवं निवर्तमान अध्यक्ष सचिन चंडालिया ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष अभिनंदन गादिया को शपथ ग्रहण करवाई। शपथ विधि के बाद अध्यक्ष अभिनंदन गादिया ने अपनी नवनियुक्त टीम की घोषणा कर संकल्प करवाए। नवनिर्वाचित अध्यक्ष ने अपने वक्तव्य में कहा कि - हमारे सामने बहुत बड़ा दायित्व है और तेरापंथ युवक परिषद के लिए विशेष कार्य- आचार्यश्री का चातुर्मास है।

युवाशक्ति को चातुर्मास काल में समय का पूर्ण नियोजन करना है, अपना पूरा श्रम लगाना है। इस कार्यक्रम में आचार्यश्री महाश्रमण चातुर्मास व्यवस्था समिति अध्यक्ष संजय सुराणा एवं टीम, सूरत सभा अध्यक्ष मुकेश बैद एवं टीम, शाखा प्रभारी कुलदीप कोठारी, जेटीएन से पवन फुलफगर एवं अभातेयुप सदस्यों की गरिमामय उपस्थिति रही। मंत्री सौरभ पटावरी ने मंच का संचालन किया।

पूर्वांचल कोलकाता

तेयुप पूर्वांचल कोलकाता के सत्र 2024-25 के नव मनोनीत अध्यक्ष नवीन सिंघी व उनकी कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह मुनि जिनेशकुमार जी ठाणा 3 के सान्निध्य में विनायक एनक्लेव - बी टी रोड, कोलकाता में आयोजित किया गया। बेहाला परिषद के नवनिर्वाचित अध्यक्ष के शपथ का कार्यक्रम भी साथ में हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनिश्री ने नमस्कार महामंत्र के साथ कराया। निवर्तमान अध्यक्ष संदीप सेठिया ने नव मनोनीत अध्यक्ष को पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई।

अध्यक्ष नवीन सिंघी ने अपने वक्तव्य में परिषद के विकास को ओर भी गतिमान करने का संकल्प लिया और अभातेयूप के तीनों आयाम को हर घर तक ले जाने की भावना प्रकट की। नव गठित कार्यकारिणी की घोषणा करते हुए उन्होंने पदाधिकारियों के नामों की घोषणा की, जो इस प्रकार हैं - श्री श्रेयांश दुगड़ (उपाध्यक्ष प्रथम), नीरज बेंगाणी (उपाध्यक्ष द्वितीय), मुकेश सेठिया (मंत्री), यश दुगड़ (सहमंत्री प्रथम), विनीत नौलखा (सहमंत्री द्वितीय), हर्ष सिरोहिया (कोषाध्यक्ष), यशवर्धन श्यामसुखा (संगठन मंत्री)।

इसके पश्चात उन्होंने कार्यसमिति सदस्य एवं क्षेत्रीय सहयोगियों के नामों की घोषणा की। मुनिश्री ने आध्यात्मिक कार्यों से जुड़ने के लिए प्रेरित किया।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर विविध कार्यक्रम का आयोजन

साउथ कोलकाता

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के उपक्रम फिट युवा - हिट युवा के अन्तर्गत तेरापंथ युवक परिषद् साउथ कोलकाता द्वारा प्रेक्षा फाउंडेशन, श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा साउथ कोलकाता, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के सहयोग से लायंस सफारी पार्क में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यशाला का आयोजन किया गया। नमस्कार महामंत्र के जाप के तत्पश्चात प्रेक्षाध्यान गीत का संगान किया गया । रश्मि सुराणा ने आए हुए सभी संभागियों का स्वागत किया। लायंस क्लब कोलकाता नार्थ के अध्यक्ष विनोद कुमार सुराना, तेयुप अध्यक्ष मोहित बैद ने योग दिवस पर अपने विचार व्यक्त किए। योगा प्रशिक्षिका सुनीता जैन ने योग एवं ध्यान की विस्तृत जानकारी देते हुए विभिन्न प्रकार की योग क्रियाएं करवाई। कार्यक्रम में संदीप डागा, अमित सुराना, मनोज नाहटा, संदीप सेठिया, प्रदीप खटेड़ का विशेष श्रम लगा। कार्यक्रम में लगभग 50 लोगों ने उपस्थिति दर्ज कराई ।

जसोल

आयुष विभाग, ग्राम पंचायत जसोल, श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, तेरापंथ युवक परिषद, तेरापन्थ महिला मंडल, तेरापन्थ कन्या मंडल, अणुव्रत समिति, प्रेक्षा वाहिनी के संयुक्त तत्वावधान में 10 वाँ अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन स्थानीय एस. एन. वोहरा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय प्रांगण में हुआ। अणुव्रत समिति जसोल अध्यक्ष पारसमल गोलेच्छा ने बताया की अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस समारोह अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी के तत्वावधान में जीवन विज्ञान विभाग द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित किया गया।इस अवसर पर विभिन्न प्रकार में आसान, प्राणायाम, ध्यान आदि करवाए गए।

बेंगलुरु

अणुव्रत समिति, बेंगलुरु के जीवन विज्ञान विभाग द्वारा 'अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस' के उपलक्ष्य में प्रेस्टीज अपार्टमेंट एवं बीबीयूएल जैन विद्यालय में योग औचित्य का आयोजन किया गया। प्रथम चरण का आयोजन प्रेस्टीज अपार्टमेंट एसोसिएशन के संयुक्त तत्वावधान में किया गया । लगभग 150 लोगों की उपस्थिति में प्रातः6 बजे से 7:00 बजे तक योग क्रियाएं की गई । योग प्रशिक्षक उत्तमचंद गन्ना ने योग की महत्ता बताई। अणुव्रत समिति से अध्यक्ष देवराज रायसोनी के साथ पदाधिकारियों की उपस्थिति रही। द्वितीय चरण का आयोजन शंकरपुरम स्थित बीबीयूएल जैन विद्यालय में लगभग 100 विद्यार्थियों की उपस्थिति में किया गया। प्रिंसिपल महोदय ने अणुव्रत के बारे में विशेष जिज्ञासा प्रकट करते हुए इसके नियमों की जानकारी ली, तथा आगे भी अणुव्रत के कार्यक्रमों में पूर्ण सहयोग करने की इच्छा प्रकट की।

रायपुर

रायपुर स्थित तेरापंथ अमोलक भवन में 'करे योग रहे निरोग' के अंतर्गत योग दिवस का आयोजन प्रशिक्षिका डॉ. दिव्या सिंह के मार्गदर्शन के साथ ललिता धाड़ीवाल व तपस्या जैन के सहयोग के साथ किया गया। आयोजन में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद्, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, अणुव्रत समिति, प्रेक्षा वाहिनी की सहभागिता रही।

हैदराबाद

अंतराष्ट्रीय योग दिवस पर प्रेक्षा फाउंडेशन की ओर से हैदराबाद में विभिन्न स्थानों पर योग कार्यशाला का आयोजन किया गया। तेरापंथ भवन, सिकंदराबाद, हिमायत नगर भवन, हाउसिंग सोसायटी पार्क, बरकतपुरा पार्क, व्यो ग्रुप (गुजराती समाज), डायग्नोस्टिक सेंटर आदि स्थानों पर प्रेक्षा प्रशिक्षक डिंपल बैद ने प्रेक्षा ध्यान के बारे में बताते हुए ध्यान, प्राणायाम और योग करवाया।

चेन्नई

अणुविभा के तत्वावधान में अणुव्रत समिति, तेरापंथ एजुकेशन एण्ड मेडिकल ट्रस्ट, प्रेक्षा फाउंडेशन और संघीय संस्थाओं की आयोजन में साध्वी डॉ. गवेषणाश्रीजी ठाणा 4 के सान्निध्य में तेरापंथ जैन विद्यालय, पट्टालम् में अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर 'योग से बने निरोग' कार्यक्रम समायोजित किया गया। कार्यक्रम में 300 से अधिक बच्चों के साथ अभिभावकों, अध्यापकों, श्रावक समाज की उपस्थिति रही। नमस्कार महामंत्र के बाद विद्यालय विद्यार्थिों ने अणुव्रत गीत संगान से मंगलाचरण किया। विद्यालय परिवार से प्रधानाध्यापिका आशा क्रिस्टी ने, ट्रस्ट चेयरमैन एम. जी. बोहरा, अणुव्रत समिति अध्यक्ष ललित आंचलिया, प्रेक्षा फाउंडेशन से भारती मुथा ने स्वागत स्वर के साथ अपने विचार व्यक्त किए। साध्वी डॉ. गवेषणाश्री ने कहा कि योग भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग हैं। विद्यार्थियों को विशेष प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि योग का मतलब होता है जोड़ना। योग साधारण को असाधारण बनाता है।

साध्वीश्री ने अभिभावकों को भी विविध आसनों के द्वारा अनेकानेक बिमारियों को दूर करने की शक्ति समझाई। ध्यान से रोग प्रतिरोधक क्षमता का विकास होता है और तनाव से मुक्ति पाई जा सकती है। साध्वी मयंकप्रभाजी ने कहा कि योग से आई क्यू, इ क्यू, पी क्यू, एस क्यू लेवल बढ़ता है। इमोशंस एवं नेचर पर कन्ट्रोल होता है। साध्वी मेरुप्रभाजी ने 'अच्छे बच्चे हो तैयार', साध्वी दक्षप्रभाजी ने 'योग के अभ्यास से जीवन बदलता है' गीतिकाओं से प्रेरणा दी। कार्यक्रम का संचालन विद्यालय से संजय भंसाली ने किया। धन्यवाद ज्ञापन अणुव्रत समिति मंत्री स्वरूप चन्द दाँती ने दिया। कार्यक्रम की शुरुआत में बच्चों द्वारा विविध आसान किये गये।

उत्तर कोलकाता

आचार्य महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि जिनेशकुमारजी के सान्निध्य में प्रेक्षा फाउंडेशन के तत्वावधान में तेरापंथी सभा एवं तेरापंथ युवक परिषद के द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम का आयोजन विनायक कॉम्प्लेक्स में किया गया। मुनिश्री जिनेशकुमारजी एवं प्रेक्षाट्रेनर मंजू सिपाणी ने क्रमशः प्रेक्षाध्यान व योगासन के प्रयोग कराए। मुनिश्री ने इस अवसर पर कहा- योग भारत की प्राचीन परंपरा का एक अमूल्य उपहार है। यह दिमाग और शरीर की एकता का प्रतीक है। यह सद्विचार संयम, ऊर्जा व स्फूर्ति देने वाला टॉनिक है। योग से शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और भावनात्मक लाभ होता है। योग का अर्थ है आत्मा का सार्वभौमिक चेतना से मिलन, जो शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक शक्तियों को जोड़ता है । मुनिश्री ने आगे कहा कि योग की साधना से भाव विशुद्ध होते हैं।

गुवाहाटी

प्रेक्षा फाउंडेशन द्वारा निर्देशित योग एवं प्रेक्षा ध्यान शिविर का आयोजन प्रेक्षा वाहिनी, गुवाहाटी के सहयोग से श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, अणुव्रत समिति द्वारा किया गया। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष बाबूलाल सुराणा ने अपने संबोधन में सभी को योग दिवस की शुभकामनाएं दी। तत्पश्चात स्थानीय प्रेक्षा वाहिनी के सदस्यों ने योगाभ्यास, आसन प्राणायाम तथा प्रेक्षाध्यान एवं यौगिक क्रियाएं करवाई। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रेक्षाध्यान गीत से हुआ। इस अवसर पर तेयुप अध्यक्ष सतीश भादानी, अणुव्रत समिति अध्यक्ष बजरंग बैद के साथ सभी संघीय संस्थाओं के पदाधिकारी एवं सदस्य गण उपस्थित थे। धन्यवाद ज्ञापन सभा के वरिष्ठ सह मंत्री राकेश जैन ने किया।

लिलुआ

अंतराष्ट्रीय योग दिवस पर अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के आयाम 'फिट युवा–हिट युवा' के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद्, लिलुआ द्वारा प्रेक्षाध्यान एवं योग साधना कार्यशाला का आयोजन लिलुआ तेरापंथी सभा भवन में किया गया। प्रशिक्षिका डोली तिवारी एवं उपासक आनंद लूनिया ने मन को शांत करने और ध्यान केंद्रित करने के लिए नवकार मंत्र के साथ कायोत्सर्ग ध्यान प्रक्रिया करवाई। लिलुआ तेरापंथी सभा, महिला मंडल एवं तेयुप के सदस्यों ने कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु सहभागिता दर्ज कराई। लिलुआ तेरापंथी सभा के मंत्री शरत लूनिया ने आभार ज्ञापित किया।

साउथ हावड़ा

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में फिट हुआ हिट हुआ के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष पर योग कार्यशाला का आयोजन वन शॉर्ट टर्फ विवेक विहार में तेरापंथ युवक परिषद् साउथ हावड़ा द्वारा किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के संगान के साथ हुआ। तत्पश्चात परिषद् अध्यक्ष गगनदीप बैद ने उपस्थित सभी का स्वागत अभिनंदन करते हुए कार्यक्रम की शुरुआत की। प्रशिक्षिका देविका पोरेल ने उपस्थित सभी को सूर्य नमस्कार, नौकासन, चक्रासन, वृक्षासन एवं विभिन्न प्रकार के योग क्रियाओं की जानकारी प्रेषित करते हुए उन सबका प्रयोग करवाया। कार्यक्रम में सभा के संगठन मंत्री पवन कुमार बेंगाणी एवं अणुव्रत समिति हावड़ा के अध्यक्ष दीपक नखत ने अपने भाव व्यक्त किए। कार्यक्रम में प्रबंध समिति, कार्य समिति सदस्य एवं किशोर मंडल सहित श्रावक समाज से 90 जनों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम के प्रायोजक स्व. घेवरचंद-घेवरी देवी बोहरा परिवार से पधारे मनोज बोहरा ने अपने विचार रखें। कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री अमित बेगवानी ने किया एवं उपस्थित सभी का आभार संयोजक प्रवीण बैंगाणी ने किया।

इस्लामपुर

अणुव्रत विश्व भारती के तत्वावधान में जीवन विज्ञान विभाग द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में अणुव्रत समिति इस्लामपुर द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

अहमदाबाद

तेरापंथ सेवा समाज व प्रेक्षा वाहिनी शाहीबाग अहमदाबाद के संयुक्त तत्वावधान में योग शिविर का आयोजन मुनि मुनिसुव्रतकुमारजी एवं मुनि डॉ. मदनकुमारजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन शाहीबाग में आयोजित किया गया। मुनि मुनिसुव्रतकुमार जी ने प्रेक्षागीत के द्वारा मंगलाचरण कर कहा कि प्रेक्षाध्यान आचार्य महाप्रज्ञ जी का मानव जाति को महान अवदान है। प्रेक्षाध्यान आधि, व्याधि और उपाधि को दूर करने का राजमार्ग है, जो कि मानसिक समाधि की और अग्रसर होता है, आवश्यकता है कि हम इसका निरंतरता से प्रयोग करें। मुनि डॉ. मदनकुमारजी ने कहा कि प्रेक्षाध्यान जीवन में रूपांतरण की वैज्ञानिक प्रणाली है। आज के युग में इसकी उपयोगिता और भी बढ जाती है, आवश्यकता इस बात की है कि प्रेक्षाध्यान, योग हमारे जीवन की प्रयोगशाला बने। मुनिश्री ने प्रेक्षाध्यान के सुन्दर प्रयोग करवाए। स्वागत भाषण तेरापंथ सेवा समाज के प्रधान ट्रस्टी सज्जनराज सिंघवी ने किया। आभार ज्ञापन तेरापंथ सेवा समाज के अध्यक्ष नानालाल कोठारी ने किया।

दिनहाटा

स्थानीय तेरापंथ भवन में प्रेक्षा फाउंडेशन के तत्वावधान में योग दिवस का आयोजन किया गया जिसमें कुल 80 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रशिक्षक टीकमचंद बैद द्वारा कार्यशाला में योग, आसन, प्राणायाम, कायोत्सर्ग आदि के प्रयोग करवाए गए।

सामुदायिक जीवन में भी करें एकत्व का अनुभव : आचार्यश्री महाश्रमण

मैदाणे।

2 जुलाई 2024

जिन शासक प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मंगल देशना प्रदान कराते हुए फरमाया कि आदमी में समझ शक्ति के साथ सहन शक्ति भी हो तो बहुत अच्छी बात हो सकती है। समझ शक्ति ज्ञानावरणीय कर्म के क्षय से और सहन शक्ति चारित्रमोहनीय कर्म के क्षय से जुड़ी हुई है। श्रवण शक्ति, दर्शन शक्ति, समझ शक्ति और सहन शक्ति इस प्रकार ये चार चीजें हो जाती हैं। श्रवण शक्ति से व्यक्ति बात को अच्छी तरह सुन लेता है। दर्शन शक्ति से दूर की चीज को भी देखकर पहचान लेता है। श्रवण शक्ति कान से और दर्शन शक्ति आंखों से जुड़ी हुई हैं। श्रवण शक्ति कमजोर होने से थोड़ी कठिनाई हो सकती है, पर दर्शन शक्ति कमजोर होने से अधिक कठिनाई हो सकती है।

शरीर के संदर्भ में अंधा और बहरा होना जीवन में बड़ी कमी हो जाती है। श्रवण और दर्शन शक्ति होने से व्यक्ति बात को समझ शक्ति से अच्छी तरह ग्रहण कर सकता है। समझ लेने पर सहन शक्ति हो तो मन में शांति रह सकती है। हमारे जीवन में सहिष्णुता-क्षमाशीलता का विकास हो। सहज में यदि निर्जरा का मौका मिलता है तो समता भाव से उसका लाभ उठाने का प्रयास होना चाहिए। अकेला जीवन जीना कठिन होता है, तो समुदाय में जीना भी कठिन हो सकता है। समूह में रहते हुए भी कुछ अकेलेपन का अनुभव साधक की पहचान हो सकती है।

शास्त्र में कहा गया कि स्वजन आदि तुम्हें प्राण और शरण देने वाले नहीं हो

सकेंगे, तुम भी उनके लिए प्राण और शरण देने वाले नहीं बन सकते हो। सामुदायिक जीवन की अपना महत्ता होती है। उच्च साधना की भूमिका में एकाकी जीवन की अपनी उपयोगिता होती है। कहा गया- 'नमि तूं एकाकी भलो, दोय मिल्या दुःख होय'। दो होने से द्वन्द-टकराव हो सकता है। सामुदायिक जीवन में साथ में रहकर भी समाधि में रहें। अनेकता होने पर भी एकत्व में रहें, - 'अनेकता में एकता, साधक की विशेषता'।

जीव अकेला आया है, अकेला ही जाएगा। व्यक्ति का दृष्टिकोण सम्यक बन जाए तो सहन करना आसान है। कोई तकलीफ दे तो व्यक्ति यह सोचे कि मैं मेरे कर्मों के योग से ही मैं कष्ट में आया हूं, दूसरे तो निमित्त मात्र हैं। अपने विवेक का उपयोग करें, अनावश्यक सख्ती का प्रयोग नहीं करें।

जहां पर आवश्यकता है, दायित्व है, वहां कुछ कठोरता का प्रयोग भी किया जा सकता है। व्यक्ति का भीतरी संतुलन बना रहे, यह काम्य है। प्रवास स्थल डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी विद्यालय के मुख्य अध्यापक राजेंद्र क्षीरसागर ने पूज्यवर के स्वागत में अपनी भावना अभिव्यक्ति की।

सूरत तेरापंथ महिला मंडल ने गीत की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

पृष्ठ 16 का शेष

दो-दो महापुरुषों..

बाद में गुरुदेव तुलसी ने अपने जीवन के संभवतः 65वें वर्ष में उनको युवाचार्य के रूप में नियुक्त कर दिया। किसी ने आचार्य श्री तुलसी को कहा था कि आपके उत्तराधिकारी के नाम का पहला अक्षर 'म' होगा। उनका नाम नथमल था पर गुरुदेव तुलसी ने उनका नाम महाप्रज्ञ कर दिया था।

जीवन में 59वें वर्ष में वे युवाचार्य बने। राजलदेसर मर्यादा महोत्सव में वि.सं. 2035 में उनको युवाचार्य बनाया गया था। फिर गुरुदेव तुलसी दिल्ली पधारे, वहां युवाचार्य महाप्रज्ञ को साथ लेकर पधारे। शेषकाल में कुछ दिन गुरुदेव का विराजना हुआ था, फिर गुरुदेव तुलसी तो पंजाब पधार गए थे और युवाचार्य महाप्रज्ञ को कुछ समय के लिए दिल्ली में छोड़ दिया था। उस समय कुछ दिन मुझे भी उनके साथ रहने का अवसर प्राप्त हुआ। बाद में गुरुदेव तुलसी के साथ लुधियाना में चातुर्मास हुआ। उस चातुर्मास में साधु-साध्वियों का अध्ययन होता, गुरुदेव तुलसी के सान्निध्य में युवाचार्य महाप्रज्ञ जी कुछ बताते, कुछ होम वर्क देते। अनेक साधु-साध्वियां उस कक्षा में सहभागी थे। लुधियाना चतुर्मास के बाद गुरुदेव तुलसी पंजाब की यात्रा में थे और युवाचार्य महाप्रज्ञ जी को सीधा लाडनूं भिजवा दिया था। उस समय युवाचार्य महाप्रज्ञजी ने गुरुदेव को एक पत्र भी निवेदित किया था कि मैं एक वर्ष का हो गया हूं। बाद में गुलेरिया नाम के गांव में उनका मिलना हुआ था। अनेक बार उनका प्रवास अलग होता पर चातुर्मास साथ में होता। उनके युवाचार्य काल में गुरुदेव श्री तुलसी भी सक्रिय थे।

महासती साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी ने गुरुदेव तुलसी से योगक्षेम वर्ष की मांग की, युवाचार्य महाप्रज्ञजी ने मांगा का समर्थन किया फिर गुरुदेव तुलसी ने भी स्वीकार कर लिया। गुरुदेव तुलसी के जीवन काल के 75वें वर्ष का वह आयोजन था। राजलदेसर के चातुर्मास में गुरुदेव तुलसी कुछ अस्वस्थ हो गए। डॉक्टर ने उन्हें बेड रेस्ट करने की सलाह दी, युवाचार्य महाप्रज्ञ जी ने कहा- बेड रेस्ट नहीं कायोत्सर्ग करेंगे। अगला चातुर्मास दिल्ली में होना था। बीच में सुजानगढ़ पधारे। उस मर्यादा महोत्सव में गुरुदेव तुलसी ने अपना आचार्य पद विसर्जित कर युवाचार्य महाप्रज्ञ को आचार्य पद पर स्थापित कर दिया था। यह एक अद्वितीय घटना थी कि गुरुदेव श्री तुलसी ने अपने जीवनकाल में अपने आचार्य पद का विसर्जन किया और स्वयं अपने युवाचार्य का आचार्य पदाभिषेक किया। आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के जीवन का एक महत्वपूर्ण कार्य है- आगम सम्पादन। गुरुदेव तुलसी भी अपना सक्रिय योगदान देते, आचार्य महाप्रज्ञ जी मानो आगम संपादन की रीढ़ थे। आचार्य महाप्रज्ञ जी ने आचारांग पर संस्कृत भाषा में भाष्य लिखा था। यह एक विशेष घटना थी, पिछले लगभग 150 वर्षों में किसी अन्य आचार्य ने भाष्य लिखा हो ऐसी जानकारी नहीं है। हिंदी में भगवती भाष्य भी उनका विराट कार्य था। मुनि श्री महेंद्रकुमारजी स्वामी का भी भगवती भाष्य में योगदान रहा था। भगवती भाष्य नाम संभवतः गुरुदेव तुलसी का फरमाया हुआ था। पहले प्रत्येक अध्ययन के बाद टिप्पण की परंपरा थी, भगवती में थोड़े-थोड़े सूत्रों के बाद ही टिप्पण हो गया, इस रूप में भी नवीनता थी। फिर एक कल्पना के बाद आगमों को कुछ भागों में बांटकर आत्मवाद, लोकवाद, क्रियावाद, कर्मवाद, पुनर्जन्मवाद आदि का भी कार्य हुआ। यह कल्पना भी कुछ अंशों में साकार हो गई, कुछ अनाकार रूप में है। जैसे आगम संपादन में महाप्रज्ञ प्रवर रीढ़ हैं वैसे प्रेक्षाध्यान के कार्य में भी गुरुदेव महाप्रज्ञजी रीढ़ के रूप में रहे हैं। जीवन विज्ञान में भी युवाचार्य महाप्रज्ञ जी का योगदान रहा। समण श्रेणी के लिए भी उन्होंने कार्य किया था। 10 आचार्यों में सबसे अधिक आचार्य श्री तुलसी का लगभग 61 वर्ष का आचार्य-गणाधिपति का काल रहा। जीवन काल में 10 आचार्यों में सबसे अधिक (लगभग 90 वर्ष) आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का रहा। उनकी बात-चीत में, व्यवहार में शिष्टता और शालीनता उनकी अपनी शैली थी। वे एक साधक व्यक्तित्व थे। आसन, ध्यान, कायोत्सर्ग, खान-पान, लेखन, साहित्य पठन आदि से युक्त उनकी अपनी जीवन शैली थी। मुनि काल में 'आत्मा' गांव में आचार्य तुलसी ने मुनि नथमल जी को फरमाया था- मैं इतने वर्ष तो अकेला ही काम करता रहा हूं। अब से तुम भी मेरे साथ जुड़ो। कई बरसों तक उन्होंने साधु-साध्वियों, समणियों को अध्यापन करवाया था। युवाचार्य अवस्था से ही पढ़ाना शुरू कर दिया था। भगवती सूत्र का वाचन, ज्ञान बिंदु प्रकरणम्, न्याय कुमुद चंद्र, प्रमाण मीमांसा आदि का अध्यापन वे करवाते।

मेरे पर तो उनकी विशेष कृपा रही। युवाचार्य के रूप में लगभग 13 वर्षों तक मुझे साथ रहने का मौका मिला। मैं अगर आसपास रहता तो मेरे हाथ का सहारा लेते। गुरुदेव तुलसी भी मेरे हाथ का सहारा लेते, गुरुदेव महाप्रज्ञ जी भी मेरे हाथ का सहारा लेते। मेरा हाथ दो-दो महापुरुषों के हाथ से स्पृष्ट है। मानो उनका हाथ मेरे हाथ पर ही नहीं, मेरे सिर पर भी था। आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने मुझे अनेक कार्य करने का खुला अवसर दिया था। गुरुकुलवास में संतों की व्यवस्था का कार्य मेरे से करवाते। आचार्य श्री का कृपा भाव, छूट, वात्सल्य, विश्वास था, तभी मैं यह सब कर पाया। मैं कभी अलग यात्रा में रहता तो कई बार साधु-साध्वियों के पत्र मेरे पास आ जाते और मैं वहीं से उनका उत्तर दे देता।

आचार्य महाप्रज्ञ जी ने मुझे आगे बढ़ने का कितना मौका दिया था। संघीय कार्यों, गोष्ठियों आदि में भी मुझे जोड़ा, अंतरंग कार्यों में निकट में रहने का अवसर मिला। यों गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञजी, दोनों के पास रहने और अंतरंग कार्यों में जुड़ने का अवसर मुझे मिला। मुझे बाल मुनि की अवस्था में उन्होंने ध्यान करने की प्रेरणा दी थी। जब युवाचार्य की अवस्था में आचार्य महाप्रज्ञ जी का दिल्ली पधारना हुआ तब मुझे व्यक्तिगत सेवा भी कराई थी। धीरे-धीरे मुझे उनकी निकटता मिलती गयी। फिर महाश्रमण, फिर युवाचार्य बना दिया। सन् 1997 में उन्होंने मुझे अपना उत्तराधिकारी भी घोषित कर दिया था। आचार्य श्री तुलसी ने आचार्य श्री महाप्रज्ञ को गीता पर भाषण देने के लिए कहा था, पर उनकी विद्यामानता में वह कार्य नहीं हो पाया था। मुझे आचार्य महाप्रज्ञ जी ने कहा- अब मैं नहीं, तुम भाषण दो। मैंने आचार्य प्रवर की विद्यामानता में गीता और उत्तराध्ययन पर तुलनात्मक भाषण दिया था।

आचार्य महाप्रज्ञ जी संतों के नाम के साथ प्रायः 'जी' लगाते थे पर मुझे महाश्रमण के नाम से ही पुकारते थे। यह उनकी विशेष कृपा मानता हूं कि शब्द का 'जी' नहीं लगाया पर मानो खुद का 'जी' मेरे से लगा लिया। युवाचार्य बनाने के बाद मुझे मान-सम्मान और निकटता दी, खुला आकाश दिया। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने हमारे धर्मसंघ को कितना योगदान दिया था। श्रमण श्रेणी के विकास में उनका योगदान था। उनके साहित्य से, प्रेक्षाध्यान से लोगों को लाभान्वित होने का अवसर मिला था। मैं उनके 105वें जन्म दिवस पर उनको वन्दन करता हूं, श्रद्धा से स्मरण करता हूं। परोक्ष रूप में भी उनका आशीर्वाद मिलता रहे।

शाश्वत आत्मा के कल्याण के लिए करें धर्म की साधना : आचार्यश्री महाश्रमण

सामोडे।
01 जुलाई, 2024

जन-जन का कल्याण करते हुए महातपस्वी आचार्यप्रवर सांयकालीन विहार कर सामोडे से पिंपलनेर पधारे जहां पूज्य प्रवर की पावन सन्निधि में नव निर्मित तेरापंथ भवन का लोकार्पण कार्यक्रम भी समायोजित हुआ।

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी आज बारह किलोमीटर का विहार कर कन्या विद्यालय परिसर सामोडे पधारे। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में परम पावन ने पावन प्रेरणा प्रदान कराते हुए फरमाया कि दो प्रकार की विचारधाराएं हैं - एक तत् जीव, तत् शरीरवाद और दूसरी अन्य जीव, अन्य शरीरवाद।

तत् जीव, तत् शरीरवाद वाली विचारधारा नास्तिकवाद की विचारधारा है, जहां आत्मा और शरीर को अलग-अलग नहीं माना गया है। अन्य जीव, अन्य शरीर अर्थात् आत्मा अलग है, शरीर अलग है। यह जो भिन्नता की विचारधारा है, भेद विज्ञान की विचारधारा है, यह आस्तिकवाद की विधारधारा है।

अध्यात्म की साधना और मुख्यतया अध्यात्म का जगत इस बात पर टिका हुआ है कि आत्मा अलग है, शरीर अलग है। आत्मा शाश्वत, अविनाशी और अमर है, शरीर नश्वर है। इस धारणा की भित्ति पर मानों अध्यात्म का जगत ठहरा हुआ है। जो शरीर हमें दिखाई दे रहा है वह स्थूल औदारिक शरीर है। इसके सिवाय दो शरीर सूक्ष्म और सूक्ष्मतर शरीर हमारे पास हैं। सूक्ष्म शरीर तेजस शरीर और सूक्ष्मतर कार्मण शरीर है। जैन विद्या में पांच शरीर बताए गए हैं- औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तेजस और कार्मण। इन पांचों में से हमारे पास तीन शरीर हैं - औदारिक, तेजस और कार्मण। हमें जो मनुष्य की देह मिली है इसका कारण भी कार्मण शरीर है। सुख-दुःख का कारण यह कार्मण शरीर ही है।

यह कार्मण शरीर हमारे साथ अनन्त काल से है, यह मोक्ष होने पर ही छूट पाएगा। किस जीव को अगला जन्म कहां लेना है यह नियामकता भी कार्मण शरीर के पास है। मनुष्य और तिर्यंच प्राणियों के औदारिक शरीर होता है। देव और नैरयिक जीवों के वैक्रिय शरीर होता है। इस औदारिक शरीर की विशेषता है कि इससे उदार कार्य हो सकते हैं। मोक्ष की प्राप्ति मनुष्य के इस औदारिक शरीर से ही हो सकती है। केवल मनुष्य को प्राप्त औदारिक शरीर से ही मोक्ष मिल सकता है।

आत्मा का पुर्नजन्म होता है। आत्मा अभी भी है, पहले भी कहीं थी, और फिर आगे भी कहीं रहेगी। आत्मा अखंड है। ना इसका कोई विभाजन हो सकता है ना दो आत्माएं कभी साथ में मिल सकती है। एक शरीर में अनन्त जीव हो सकते हैं पर ऐसा नहीं हो सकता कि देह दो हों और जीव एक।

आत्मा शाश्वत है और शरीर अशाश्वत है। व्यक्ति स्वयं से यह प्रश्न करे कि मैं शाश्वत के लिए क्या कर रहा हूं? अशाश्वत के लिए क्या कर रहा हूं? अशाश्वत के लिए व्यक्ति अनेकों काम करता है पर आत्मा के हित के लिए, शाश्वत के लिए, अध्यात्म की साधना, धर्माराधना करनी चाहिए। धर्म का संचय करना चाहिए। धर्म शाश्वत आत्मा का कल्याण करने वाला बन सकता है। गृहस्थ भी धर्म की उत्कृष्ट साधना कर सकते हैं। मरूदेवा माता ने तो बिना दीक्षा ग्रहण किए ही मोक्ष की प्राप्ति कर ली थी। पूज्यप्रवर कालूगणी, गुरुदेव तुलसी और गुरुदेव महाप्रज्ञ जी तीनों की माताओं ने दीक्षा ली थी। पर तेरापंथ धर्मसंघ में एक इतिहास यह भी है कि आचार्यों की माताओं के दीक्षा के संदर्भ में एकमात्र आचार्य श्री तुलसी हुए जिन्होंने स्वयं अपनी माता को दीक्षित किया था। भगवान ऋषभ ने अपनी माता को दीक्षा नहीं दी थी फिर भी गृहस्थ अवस्था में भी मरूदेवा माता ने सिद्धत्व की प्राप्ति कर ली। ऐसा अवसर तो अतिदुर्लभ है, हम शाश्वत आत्मा के कल्याण के लिए धर्म और अध्यात्म की साधना करें।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि जो संत होते हैं, वे शीतल होते हैं, शीतलता प्रदान करने वाले होते हैं। इसलिए संत जनों के आस-पास लोगों की भीड़ जमा होती है। लोग संतों को अपने क्षेत्र में बुलाना चाहते हैं। संतजन लोगों को सही मार्ग दिखाते हैं, आध्यात्मिक सुख का खजाना देते हैं जिससे आदमी शीतलता प्राप्त कर सकता है। संतों से ज्ञान प्राप्त होता है। संत तो पारसमणि होते हैं, लोहे को सोना बना देते हैं। हमें भी जीवन को कुन्दन बनाना है।

कन्या विद्यालय परिसर की ओर से अध्यापिका मनीषा शिंदे, ब्रह्मकुमारी सुरेखा दीदी, ज्योति गोगड़, दिनेश गोगड़ ने पूज्य प्रवर के स्वागत में अपने उद्गार व्यक्त किए। स्थानीय महिला मंडल, नथमल गोगड़ एवं गोगड़ परिवार की बेटियों ने पृथक-पृथक गीत का संगान किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

सम्पादकीय

चातुर्मास के अनुपम अवसर का लाभ उठाएं

चातुर्मास कर्म निर्जरा का एक विशेष समय होता है। पंच महाव्रत धारी साधु-साध्वियां तो अपनी हर करणी में निर्जरा करते ही हैं। चार महीने के अंतराल में उन्हें और विशेष साधना का अवसर प्राप्त हो जाता है। खैर, उनका तो समग्र जीवन ही निर्जरा के लिए लगा हुआ है। जो गृहस्थ देश विरति भी हैं, उनके लिए यह समय विशेष ज्ञानाराधना, श्रुताराधना और तपाराधना का समय है।

कुछ व्यक्ति स्वयं प्रेरित होते हैं और कर्म निर्जरा में रत हो जाते हैं और कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जिन्हें एक सहारे की, प्रेरणा की आवश्यकता होती है और इस प्रेरणा में योगभूत बनते हैं देश-विदेश में पांव-पांव चलकर श्रावक श्राविकाओं की सार संभाल करने वाले, त्याग प्रत्याख्यान की प्रेरणा देने वाले, नियमित प्रवचन करने वाले, अनुयायियों को श्रावकोचित आचार का बोध पाठ पढ़ाने वाले, समिति-गुप्ति की आराधना में रत श्रमण एवं श्रमणियां।

तेरापंथ धर्म संघ एक सुव्यवस्थित धर्म संघ है। यहां जन्म लेने के पश्चात जैन संस्कार विधि से नवजात शिशु का नामकरण होता है, कुछ बड़ा होने पर ज्ञानशाला के संस्कार प्राप्त होते है, किशोरावस्था में किशोर मंडल या कन्या मंडल का सहारा मिलता है, युवा अवस्था में युवक परिषद, महिला मंडल और प्रोफेशनल फोरम का साथ मिलता है, आगे बढ़ें तो अणुव्रत समिति, तेरापंथ सभा आदि अनेक संस्थाएं हैं जो श्रावक-श्राविकाओं को इस धर्म संघ से जोड़े रखती हैं। इस जुड़ाव से संस्कारों का बीजारोपण और पल्लवन तो होता है अपितु यही संस्कार संघ को शुभ भविष्य भी अर्पित करते हैं। हालांकि संघीय संस्थाएं हर समय हर क्षेत्र में एक्टिव रहती ही हैं पर चातुर्मास और उसमें भी चारित्रात्माओं का सान्निध्य उन्हें मोक्ष मार्ग के और निकट ले जाने वाला होता है।

जिन क्षेत्रों को चातुर्मास में साधु-साध्वियों का सान्निध्य मिलता हो, वे उस अनुपम अवसर को गंवाएं नहीं, धर्माराधना का अतिरिक्त प्रयास करें। श्रावक के बारह व्रतों को पुष्ट करने का प्रयास करें, साधु-साध्वियों की साधना में सहभागी बनने का प्रयास करें। जो क्षेत्र साधु साध्वियों की सन्निधि से वंचित रह जाते हैं वे आचार्य प्रवर को मुमुक्षु बहनों, उपासक श्रेणी के सदस्यों आदि को भिजवाने एवं भविष्य में चातुर्मास के लिए निवेदन कर सकते हैं। साधु-साध्वी जब आपके क्षेत्र में आ जाएं तो उन्हें गोचरी, दवाई, शय्यात्तर, प्रवचन, प्रवास आदि के लिए निवेदन करें। यह निवेदन भी अपने पूरे परिवार के साथ, विशेषकर आपकी भावी पीढ़ी को साथ लेकर करें, जिससे उन्हें भी भावना भाने का प्रशिक्षण प्राप्त हो। कई बार श्रावक-श्राविका इन सबका निवेदन करते हैं पर उनके पास प्रासुक जल पक्का पानी उपलब्ध नहीं रहता। हमारा यह प्रयास भी हो कि हमारे घरों में पक्के पानी का ही उपयोग किया जाए, जिससे हम भी हिंसा से बच सकें और साधु को प्रासुक जल का दान भी दे सकें। प्रवचन, दर्शन के लिए भी अपने पूरे परिवार को साथ लेकर जाएं। इससे बड़ों को समाधि और छोटों को संस्कार प्राप्त हो सकते हैं।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी बहुधा फरमाते हैं कि हमें यह अति दुर्लभ मनुष्य जन्म मिला है, इसका सदुपयोग सर्व दुःख मुक्ति के लिए करें। हम अपने आस-पास देखें और यह चिंतन करें कि हम किसी वनस्पति या तिर्यंच की योनि में नहीं, मनुष्य की योनि में हैं। इसका कारण हमारे पूर्व कृत सद्कर्म ही हो सकते हैं अन्यथा हम भी किसी अन्य गति में हो सकते थे। जब हमने पिछले जन्मों की पुण्य संपदा से यह मनुष्य भव पाया है तो आगे के लिए भी हम कुछ तैयारी रखें। जितना हो सके भावों को शुद्ध रखें, पापों से बचने का प्रयास करें। जहां प्रयोजन ना हो, वहां व्यर्थ हिंसा से बचें। इस चातुर्मास में धर्माराधना और तपराधाना में विशेष समय लगाएं। नवकारसी, जमीकंद परिहार, रात्रि भोजन त्याग, प्रवचन श्रवण, सामायिक आदि छोटे-छोटे नियमों को अपने जीवन का अंग बनाएं एवं चातुर्मास को स्वयं के लिए ऐतिहासिक बनाएं।

दो-दो महापुरुषों का हाथ मेरे हाथ पर ही नहीं, सिर पर भी था : आचार्यश्री महाश्रमण

पानबारा।
3 जुलाई 2024

आचार्य महाप्रज्ञ जी संतों के नाम के साथ प्रायः 'जी' लगाते थे पर मुझे महाश्रमण के नाम से ही पुकारते थे। यह उनकी विशेष कृपा मानता हूं कि शब्द का 'जी' नहीं लगाया पर मानो खुद का 'जी' मेरे से लगा लिया। युवाचार्य बनाने के बाद मुझे मान-सम्मान और निकटता दी, खुला आकाश दिया।

अध्यात्म के शिखर पुरुष आचार्यश्री महाश्रमणजी ने पानबारा के शास्त्रीय माध्यमिक आश्रमशाला में पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि इच्छा को आकाश के समान अनन्त बताया गया है। आकाश को मापते-मापते अनन्त जन्म चले जाएं फिर भी आकाश को मापा नहीं जा सकता। जिस प्रकार आकाश का कोई अन्त नहीं है, उसी प्रकार इच्छाओं का भी कोई अंत नहीं है। इसलिए इच्छाओं को आकाश से उपमित किया जा सकता है।

इच्छा दो प्रकार की बताई गई है। एक आध्यात्मिक संदर्भ से जुड़ी हुई इच्छा और दूसरी बुरी इच्छा। ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप के विकास की इच्छा तो अच्छी है, पर भौतिक इच्छा जो पतन की ओर ले जाने वाली हो, वह त्याज्य होती है। छोटे बालक के मन में अच्छी इच्छा जाग जाए कि मैं साधु बनूंगा तो वह बहुत आगे बढ़ सकता है।

आज आषाढ़ कृष्णा त्रयोदशी है, आज के दिन एक शिशु का प्राकट्य हुआ था। 104 वर्ष पूर्व वि.सं. 1977 में टमकोर गांव में मां बालूजी की कुक्षि से एक बालक का जन्म हुआ। उस बालक के मन में अध्यात्म जगत में जाने की इच्छा जागी। वह जगत था - साधुत्व का संसार। जीवन के ग्यारहवें वर्ष में ही वि.सं. 1987 माघ शुक्ला दशमी को सरदारशहर में उस बालक नथमल की मुनि दीक्षा अनेक दीक्षार्थियों के साथ हो गई, मां-बेटा दोनों दीक्षित हो गए।

आचार्य महाप्रज्ञ जी एक बालक के रूप में परम पूज्य कालूगणी के पास दीक्षित हुए। विकास की गति अच्छी हुई और वे अपने मुनि जीवन में एक विद्वान संत के रूप में प्रतिष्ठित हो गए। एक दार्शनिक मुनि के रूप में उनका नाम था। विद्या की आराधना में उनका बहुत अच्छा क्रम था। कालूगणी के युग में तो वे थोड़े वर्षों तक रहे, आचार्य तुलसी के युग में वे लम्बे काल तक रहे थे। तुलसी युग में उनका अनेक रूपों में विकास हुआ था।

ज्ञान के क्षेत्र में उन्होंने एक प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त किया था। वे प्रायः गुरुकुल वास में अधिक रहे थे। न्यारा में केवल दो ही चातुर्मास, एक सरदारशहर और एक दिल्ली में किए थे। युवाचार्य काल में चातुर्मास गुरुदेव श्री तुलसी के साथ और आचार्य बनने के बाद भी गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी के साथ ही हुए। गुरुकुलवास और पूरे धर्मसंघ में उनका एक प्रतिष्ठित स्थान था। विद्वता के क्षेत्र में भी उनका नाम था। आचार्य श्री तुलसी ने धर्मसंघ में जो नव उन्मेष लाए उनमें मुनि श्री नथमलजी स्वामी 'टमकोर' का अच्छा योगदान था। आचार्य श्री तुलसी एक साहस युक्त व्यक्तित्व थे, वे निर्णय कर लेते और फिर उस निर्णय को सुसंपादित करने का कार्य मुनि श्री नथमल जी स्वामी करते थे। आचार्य श्री तुलसी ने निकाय व्यवस्था का नया प्रयोग किया और मुनि श्री नथमल जी स्वामी को निकाय सचिव का पद प्रदान किया था। आचार्य महाप्रज्ञ जी अपने मुनिकाल में खड़े होकर भाषण दिया करते थे।

दार्शनिक, बौद्धिक, विद्वान लोगों के मध्य उनका वैदुष्य युक्त भाषण होता। एक बार जनता के बीच उन्होंने भाषण दिया। बाद में एक श्रावक गुरुदेव तुलसी के पास आया और बोला- आज नथमल जी स्वामी का भाषण बहुत बढ़िया हुआ। गुरुदेव ने सोचा कि यह क्या समझा होगा, गुरुदेव ने पूछ लिया- इनकी बात को समझ तो गए न कि क्या कहा था? श्रावक ने कहा समझा तो नहीं पर जब वो बोल रहे थे तब आप सिर हिला रहे थे। मैंने माना कि भाषण बढ़िया दे रहे हैं, तभी गुरुदेव प्रसन्नता से सिर हिला रहे हैं। संभवतः इस घटना से प्रेरित होकर गुरुदेव श्री तुलसी ने उन्हें इंगित किया कि भाषण साधारण जनता के योग्य हो। बाद में उनके भाषण जन भोग्य हो गए। पहले विद्वद जन भोग्य थे बाद में साधारण जन भोग्य हो गए।

संस्कृत भाषा का उनका अच्छा अध्ययन था। कभी-कभी भाषण में थोड़े शब्द ऐसे भी आते होंगे कि हर कोई पकड़ ना पाए। उनके व्यक्तित्व में एक वैदुष्य का दर्शन किया जा सकता था। मर्यादा महोत्सव में साधु-साध्वियों या केवल साध्वियों की गोष्ठी में भी उनका भाषण होता था। केवल साध्वियों की गोष्ठी में भाषण होना विशेष बात है। गुरुदेव तुलसी का उन्हें पूरा प्रोत्साहन मिलता था। हमारे धर्मसंघ में व्यवहार की भूमिका में आचार्यप्रवर द्वारा किसी को प्रतिष्ठापित किया जाता है तो उस साधु या साध्वी को सहयोग मिल जाता है। इसी प्रकार वे हमारे धर्मसंघ में प्रतिष्ठित मुनिश्री के रूप में सामने आ गये थे। (शेष पेज 14 पर)

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियां

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक - **दिनेश मरोठी**